चन्दामामा
अप्रैल १९७२
D. 2 PAIS
९० P

Photo by : SURAJ N. SHARMA

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.
सिर्फ़ २५ पैसे
PARLE POPPINS FRUITY SWEETS
25 Paise
नयी पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी —
पांच फलों के स्वादवाली १३ स्वादिष्ट गोलियां —
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।
पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो
everest/122b/PP hin

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

हमारे समाज में कुछ ऐसे लोग हैं जो उपकार का बहाना करके दूसरों को लूटते हैं और अंत में अपमानित हो जाते हैं। 'कुम्हाड़े का चोर' कहानी के द्वारा हमें यह रहस्य मालूम होता है।

कुछ ऐसे भी लोग हैं जो अपनी चालाकी से भोली औरतों को दगा देकर अपना अल्लू सीधा करते हैं, पर वे दूसरों को फँसाने के लिए जो जाल बिछा देते हैं, उसमें वे खुद फँस जाते हैं। "बेवकूफ़ औरत" नामक कहानी इसका उदाहरण है।

वर्ष : २४ अप्रैल १९७२ अंक : ८

अतिथि, र्भालकश्चैव, स्त्रीजनो, नृपति स्तथा
ए ते वित्तं न जात्तंति, जामाता चैव पंचमः ॥ १ ॥

[अतिथि, बालक, औरत, राजा और दामाद—ये पांचों धन का महत्व नहीं जानते।]

राजा राष्ट्रकृतं पापं,
राज पापं पुरोहितः,
भर्ता च स्त्रीकृतं पापं,
शिष्य पापं गुरु र्भवेत्। ॥ २ ॥

[राष्ट्र का पाप राजा का होता है। राजा जो पाप करता है, वह पुरोहित का होता है। पत्नी जो पाप करती है, वह पति का होता है। शिष्य जो पाप करता है, वह गुरु का होता है।]

वृश्चिकस्य विषं पुच्छं,
मक्षिकस्य विषं शिरः,
तक्षकस्य विषं दंष्ट्रा,
सर्वांगं दुर्जने विषं। ॥ ३ ॥

[बिच्छू के पूँछ में, मक्खी के सर में, साँप के जबड़ों में विष होता है, मगर दुर्जन के सारे शरीर में विष होता है।]
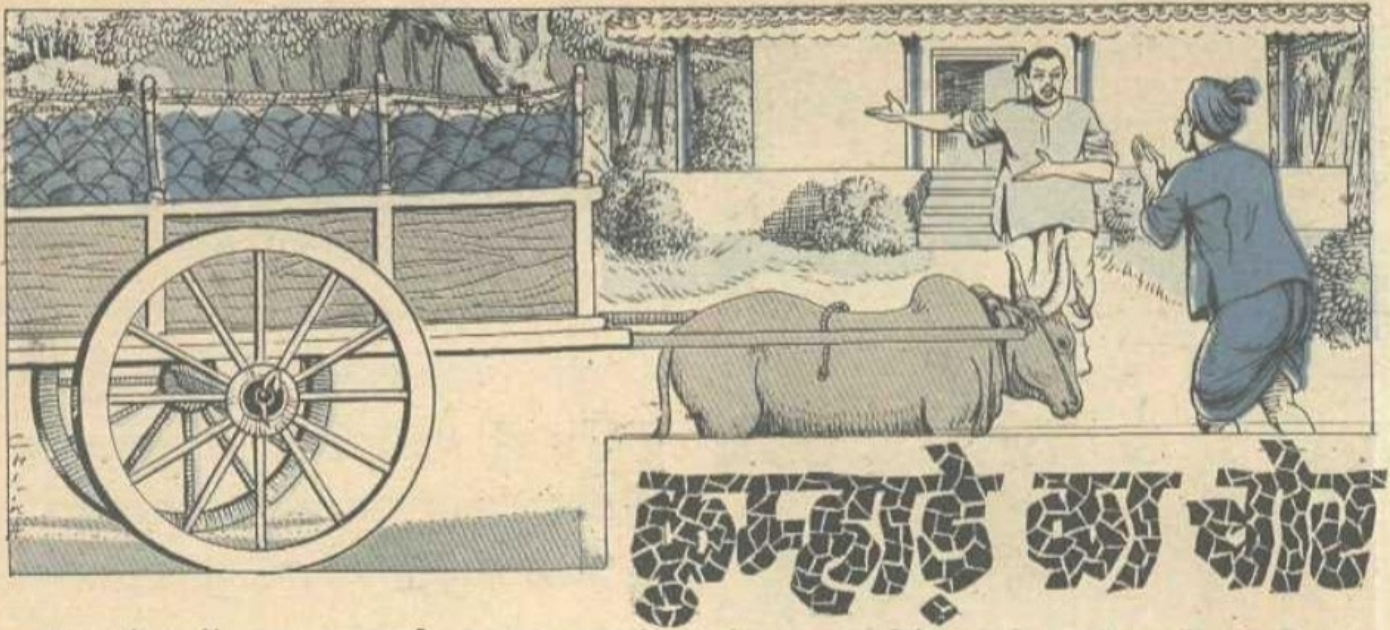
कुम्हाड़े का चोर

एक गाँव में एक कुम्हाड़े का व्यापारी था। वह जो कुम्हाड़े पैदा करता, उन्हें दूर के गाँव में गांड़ी पर ले जाता और अच्छे दाम पर बेच देता।

एक दिन वह अपने कुम्हाड़े गाड़ी पर लदवाकर उदयगिरि के निकट के एक गाँव में जा पहुँचा। सूर्यास्त होने को था। इसलिए उसने सोचा कि रात को कहीं विश्राम करके सुबह उठकर चला जाय।

वह गाड़ी के साथ गाँव में प्रवेश कर ही रहा था कि एक घर के सामने खड़े भद्रसेन नामक गृहस्थ ने व्यापारी को रोककर पूछा—"भाई, तुम कहाँ से आते हो? कहाँ जाते हो? और तुम्हारा नाम क्या है?" व्यापारी ने अपना परिचय दिया और रात को ठहरने के लिए जगह माँगी।

"अरे भाई, यह कौन बड़ी बात है? आज रात को तुम मेरे घर आराम करो और कल सवेरे अपने रास्ते चले जाओ।" भद्रसेन ने कहा।

इसके बाद गृहस्थ ने गाड़ी से बैलों को खुलावा दिया। कुम्हाड़ों को बरामदे में डलवा दिया। बैलों को चारा-पानी दिलाया। व्यापारी के लिए बढ़िया भोजन तथा सोने का अच्छा इंतज़ाम किया।

व्यापारी ने भद्रसेन की उदारता की तारीफ़ की। यात्रा की थकावट के कारण जल्द ही सो गया।

दूसरे दिन सवेरे उठते ही व्यापारी ने कृतज्ञता पूर्वक भद्रसेन को थोड़े से कुम्हाड़े देना चाहा। मगर उसने बरामदे में जाकर देखा, कुम्हाड़ों में से आधे ही रह गये हैं। उसे साफ़ मालूम हो गया कि भद्रसेन ने उसके साथ दगा किया है।

व्यापारी क्रोध में आकर बोला—"भद्रसेन! मैंने नहीं सोचा था कि तुम मेरे साथ दगा

सुरेश कुमार
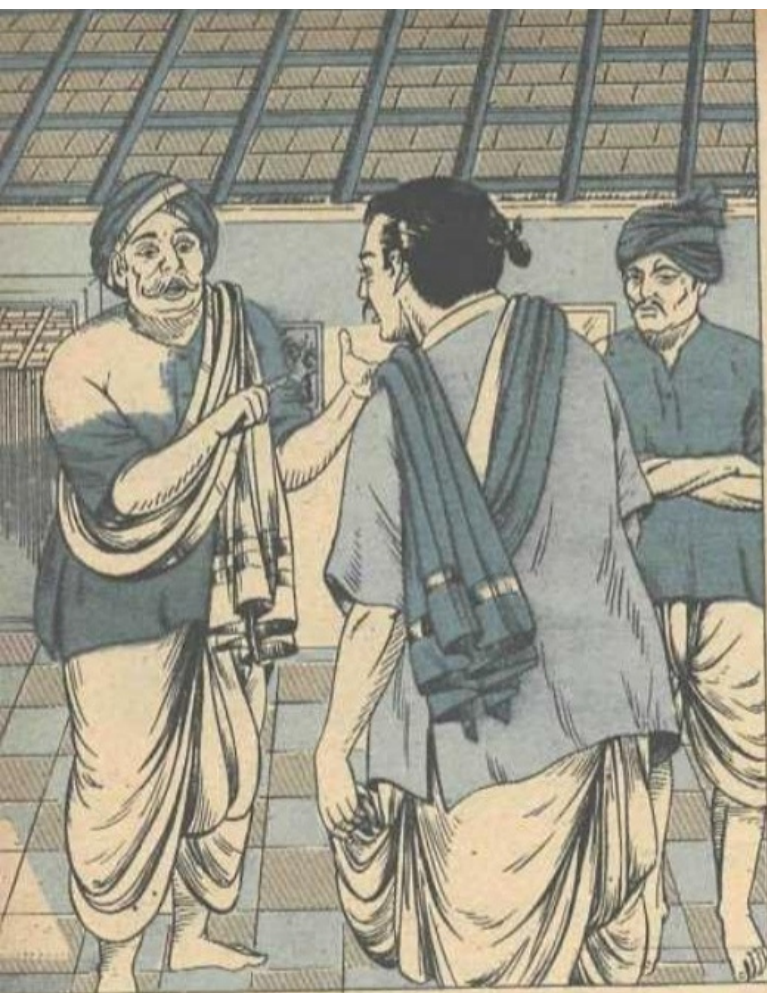
करोगे । तुम्हें मैंने धर्मात्मा समझा! मगर तुम्हींने मेरे कुम्हाड़े हड़प लिये हैं ।"

भद्रसेन ने डाँटते स्वर में कहा–"तुम्हारी अक़्ल ठिकाने पर है न? मुझसे उपकार पाकर मुझ पर ही चोरी का इलज़ाम लगाते हो? तुम जैसे आदमी को नाहक़ आश्रय दिया, यह तो ऐसा है कि उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे!"

"अरे भाई! तुम चुपचाप मेरे कुम्हाड़े मुझे लौटा दो, मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा । वरना..." व्यापारी ने कहा ।

"तुम मेरे घर से निकल जाओ । ज्यादा बकवास करोगे तो बड़ा बुरा होगा!" भद्रसेन उस पर टूट पड़ा ।

व्यापारी ने सोचा कि भद्रसेन के साथ बात करना बेकार है । इसलिए उसने बचे हुए कुम्हाड़ों को गाड़ी पर लदवाया, सीधे न्यायाधीश के घर जाकर भद्रसेन पर शिकायत की । न्यायाधीश ने व्यापारी से कहा–"यदि सचमुच भद्रसेन ने तुम्हारे कुम्हाड़ों की चोरी की है तो तुम्हें वापस दिलाना कोई मुश्किल की बात नहीं है ।" इन शब्दों के साथ व्यापारी को भद्रसेन को बुला लाने भेजा ।

भद्रसेन ने न्यायाधीश के पास आकर कहा–"सरकार! मैं बिलकुल निर्दोष हूँ । इस व्यापारी को मैंने कल रात अपने घर आश्रय देकर बड़ी भूल की । इस आपराध में यह मुझ पर चोरी का इलज़ाम लगा रहा है । वास्तव में मुझे कुम्हाड़ों की चोरी करने की कोई ज़रूरत नहीं । क्योंकि मेरे घर के पिछवाड़े में दर्जनों कुम्हाड़े पैदा होते हैं ।"

"तुम्हारी बातें मुझे सच्ची मालूम होती हैं, फिर भी तुम्हें यह साबित करना होगा कि तुमने चोरी नहीं की । इसलिए तुम अपने घर में पैदा हुआ एक कुम्हाड़ा लेते आओ ।" न्यायाधीश ने कहा ।

भद्रसेन कुम्हाड़ा लाने चला गया । उसके लौटने के पहले न्यायाधीश ने एक अभिनेता और एक वैद्य को बुला भेजा

और उन्हें समझाया कि उन्हें क्या क्या करना होगा।

भद्रसेन थोड़ी देर बाद एक कुम्हाड़ा लेकर आ पहुँचा। न्यायाधीश ने व्यापारी की गाड़ी में से एक और कुम्हाड़ा मँगवाया और कहा–"हे नट, तुम कुम्हाड़ों की नस्ल के बारे में अच्छी जानकारी रखते हो। यह बताओ कि ये दोनों कुम्हाड़े एक ही जाति के हैं या अलग अलग क़िस्म के?"

"उनका स्वाद देखकर ही बता सकता हूँ, सरकार!" इन शब्दों के साथ नट ने चाकू लेकर भद्रसेन के लाये गये कुम्हाड़े को चीरकर एक टुकड़ा मुँह में डाल लिया और दूसरे ही क्षण नीचे गिरकर छटपटाने लगा।

न्यायाधीश ने वैद्य की ओर मुड़कर कहा–"वैद्यजी! देखो तो सही, इस नट को क्या हो गया है।"

वैद्य ने उस कुम्हाड़े की जाँच की और कहा–"सरकार! यह तो ज़हरीला कुम्हाड़ा है। तुरंत इसे दवा देनी है, वरना यह मर जायगा।" ये शब्द कहते वैद्य नट को लेकर वहाँ से चला गया।

न्यायाधीश ने भद्रसेन की ओर मुडकर कहा–"भद्रसेन! क्या तुम ऐसे ही कुम्हाड़े पैदा करते हो? ये कुम्हाड़े खिलाकर सब को मार डालना चाहते हो? इसके बदले में तुम्हें कैसा दण्ड देना है, बताओ?"

"सरकार! यह कुम्हाड़ा मेरे पिछवाड़े में पैदा हुआ नहीं है! मुझे अगर मालूम होता कि ये ज़हरीले कुम्हाड़े हैं तो मैं क्यों हड़प लेता? आप जो दण्ड देना चाहते हैं, वह उस व्यापारी को दीजिये।" इन शब्दों के साथ भद्रसेन ने घबराहट में अपनी गलती स्वीकार की।

"तुमने चोरी स्वीकार की। तुमने जो कुम्हाड़े चुराये हैं, वे सब व्यापारी को दे दो। तुम्हें केवल जुर्माना लगाकर इस बार छोड़ देता हूँ!" न्यायायाधीश ने कहा। तब व्यापारी को उसके कुम्हाड़े दिलवाकर भेज दिया।

कापालिनी

काश्मीर देश में एक क्षत्रिय था। उसके सीमंतिनी नामक एक सुंदर कन्या थी। वह क्षत्रिय अल्पायु में ही मर गया जिस से उसकी सारी संपत्ति, जंगल, उद्यान तथा दुर्ग भी सीमंतिनी के अधिकार में आ गये। इसलिए उस प्रदेश के अनेक कुलीन युवक सीमंतिनी के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट करते हुए आगे आये। उनमें गणदेव नामक एक युवक था जो दिल से सीमंतिनी को प्यार करता था। मगर सीमंतिनी विवाह करने की इच्छा नहीं रखती थी। इस कारण उसने उन सब को निराश वापस भेज दिया।

सीमंतिनी को सुंदर पहाड़, जंगल तथा वहाँ के विचित्र जानवर और पक्षियों से विशेष आकर्षण था। वह कभी पैदल और कभी घोड़े पर जंगल से होकर जाती और समीप के एक पहाड़ के शिखर पर बैठकर वहाँ से सुंदर दृश्यों को देखकर घंटों तक अपना समय बिताती।

इस प्रकार प्राकृतिक दृश्यों में निमग्न सीमंतिनी के मन में कापालिक शक्तियों को प्राप्त करने की इच्छा बढ़ती ही गयी। बेताल को वश में करके परकाय प्रवेश, कामरूप, कामगमन तथा अन्य सिद्धियों को वह प्राप्त करना चाहती थी। इसलिए उनकी पूर्ति के लिए उसने विचित्र पुजाएँ, विचित्र आहार तथा उपासनाएँ भी प्रारंभ कर दीं। कभी कभी वह चन्द्रमा की ओर देखते-देखते बेहोश हो जाती, किन्हीं जड़ी-बूटियों का रस बनाकर पी लेती, अपने शरीर को कठिन कष्ट देती। इस प्रकार उसने कुछ शक्तियाँ प्राप्त कीं।

यह समाचार सुनकर गणदेव बहुत दुखी हुआ। उसने मन में सोचा–

राम नारायण वर्मा

"सीमंतिनी साधारण मानवी का रूप खोती जा रही है। साधारण मानवी के रूप में रहते वक़्त ही उसने मेरे साथ विवाह करने से इनकार किया है। अब इस हालत में वह मेरे साथ विवाह क्या करेगी?" मगर उसके मन में सीमंतिनी को साधारण मानवी बनाने का संकल्प बढ़ता गया। वह दूर रहकर ही पता लगाता रहा कि सीमंतिनी कहाँ-कहाँ घूमती है और क्या क्या पूजाएँ करती है?

महीने बीतते गये, साथ ही गणदेव के मन में सीमंतिनी की रक्षा करने की इच्छा बढ़ती गयी। आखिर उसने पिंगला नामक एक जादूगरनी की सहायता माँगी।

लोग कहा करते हैं कि पिंगला अद्‌भुत मंत्र-शक्तियाँ रखती है। वह अपवे बगीचे में तरह-तरह की जड़ी-बूटियाँ पैदा करके दवाएँ तैयार करती थी। उसने गणदेव का विचार जानकर पूछा—"सीमंतिनी अगर कापालिनी बनना चाहती है तो हम क्यों रोके?"

"क्योंकि मैं पसंद नहीं करता, इसलिए तुम जितना धन चाहती हो, मैं दे दूँगा। क्या तुम उसे साधारण मानवी बना सकती हो? ऐसी सुंदर एवं अक्लमंद युवती का कापालिनी बनकर मर जाना सहन किया नहीं जा सकता।" गणदेव ने कहा।
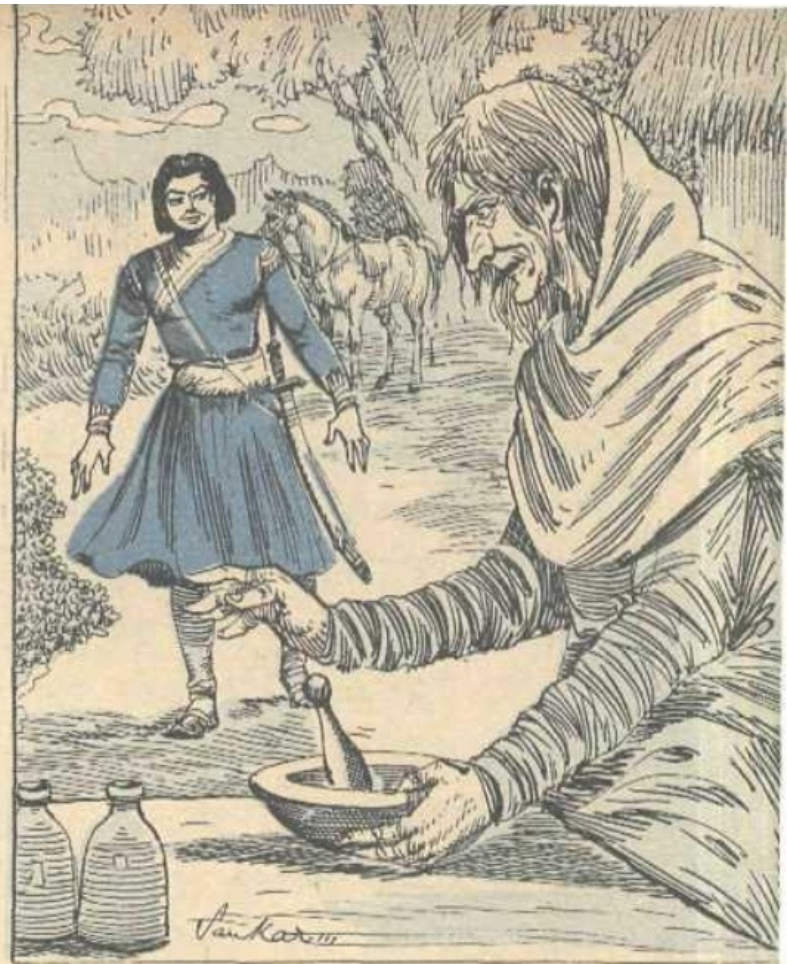
"क्या तुम समझते हो कि कापालिनी की जिंदगी बिताने में आनंद नहीं है?" पिंगला ने पूछा।

"आनंद हो सकता है? लेकिन क्या सुख प्राप्त होगा?" गणदेव ने पूछा।

"नहीं, मगर तुम्हारी पत्नी के रूप में वह ज्यादा सुखी होगी।" पिंगला ने जबाब दिया।

"इसीलिए तुम उसे मेरी पत्नी बनाने की कोशिश करो।" गणदेव ने पूछा।

"मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम अगली अमावास्या के दिन शिकारी कुत्तों को साथ लेकर जंगल में जाओ। एक सफ़ेद हिरण दिखाई देगा, तब उसे घायल किये

बिना पकड़ लाकर अपने घर में बन्द करो। बाक़ी काम में देख लूँगी।" पिंगला ने समझाया।

पिंगला ने गणदेव को अपने बगीचे के पार करने तक साथ दिया। लौटते समय लगा कि उसका बाया पैर थोड़ा लंगड़ा है।

पिंगला के कहे मुताबिक़ गणदेव अमावास्या के दिन अपने शिकारी कुत्तों के साथ जंगल में चला गया। उसे एक जगह सफ़ेद हिरण दिखाई पड़ा। तुरंत उसने अपने शिकारी कुत्तों को उस पर उकसाया। हिरण तेज़ी के साथ भागने लगा।

थोड़ी देर बाद गणदेव देखता क्या है। एक कुत्ते को छोड़ बाक़ी शिकारी कुत्ते पीछे रह गये हैं। गणदेव ने भाँप लिया कि हिरण के निकट भागनेवाला कुत्ता उसका नहीं है। वह कुत्ता लंगड़ाते दौड़ रहा था।

जल्द ही उस कुत्ते ने हिरण के पिछले पैर को अपने दाँतों से पकड़ लिया। गणदेव ने घोड़े पर आकर हिरण के गले में फंदा लगाया। इस पर हिरण ने छटपटान की कोशिश नहीं की और उसके साथ घर चला आया। गणदेव ने इस बात का ख्याल नहीं किया कि हिरण को पकड़ने वाला कुत्ता कहाँ गया।

गणदेव ने हिरण को एक कमरे में भेजकर ताला लगाया, तब दूसरे कमरे में जाकर सो गया। सवेरे जब उसकी नींद खुली तब ऐसा लगा कि सारी दुनिया उलटती जा रही है। उसने सोचा कि बाहर या तो तूफ़ान उठा है, या भूकंप हो गया है! लेकिन ऐसी कोई बात न थी। तब तक सीमंतिनी के वश में जो पिशाचिनियाँ आ गयी थीं, वे सारी शक्तियाँ उसे छोड़कर चली गयीं।

गणदेव ने हिरणवाले कमरे में जाकर देखा। वहाँ पर सीमंतिनी थी। उसने गणदेव के साथ विवाह करने के लिए आसानी से मान लिया। इसके बाद वे दोनों विवाह करके बहुत समय तक सुखी रहें।

शिलारथ

[१८]

[उद्यानवन की ओर जानेवाले रास्ते में विघ्नेश्वर पुजारी के राक्षस-हाथी पर तेल छिड़का कर खड्गवर्मा और जीवदत्त ने आग लगा दी। राजा नित्यानंद ने अपने सैनिकों को जंगली युवकों पर उकसाया। जंगली युवकों में से एक ने आगे बढ़कर जीवदत्त से कहा–"मैं जंगली दल का नेता हूँ।" बाद...]

जीवदत्त ने जंगली नेता की ओर एड़ी से चोटी तक देखा। उसकी तीक्ष्ण दृष्टि तथा उसके खड़े होने का ढंग देख जीवदत्त के मन में उसकी शक्ति और सामर्थ्य पर विश्वास जम गया।

"बड़ी अच्छी बात है। तुम ज़रूरत पड़ने पर राजा नित्यानंद के सैनिकों का सामना करने के लिए अपने साथियों को तैयार करो। मगर ख़्याल रखो, तुम लोग ख़ुद उन्हें भड़काने की कोशिश मत करो।" जीवदत्त ने कहा। इसके बाद विघ्नेश्वर पुजारी तथा स्वर्णाचारी को पास बुलाकर बोला–"तुम दोनों हमारे पास ही रहो, वरना आफ़त में फँस जाओगे; समझे!"

"उधर राजा नित्यानंद, इधर जंगली लोग हमारा वध करना चाहते हैं! इनसे बचने का उपाय क्या है?" ये शब्द कहते विघ्नेश्वर पुजारी आँसू भरने लगा।

"जब तक तुम दोनों हमारे पास रहेंगे, तब तक तुम्हें जंगलियों से कोई आपत्ति न होगी। राजा की बात हम ख़ुद देख लेंगे।" जीवदत्त ने समझाया। उसी वक़्त राजा नित्यानंद ने उच्च स्वर में कहा–"महान वीरो, उन जंगली योद्धाओं को तुम लोग बेहथियार कर दो, वरना तुम दोनों हट जाओ, वह काम हमारे सैनिक खुद करेंगे।"

"महाराज, हम जानते हैं कि आप पहले चिकनी-चुपड़ी बातों से जंगली योद्धाओं को बेहथियार करके तब उनका वध करना चाहते हैं। यह काम कभी नहीं हो सकता। आप एक काम कीजिये, आपकी सेना और जंगली योद्धा सब नगर के बाहर जाकर युद्ध कीजिये। हम प्रेक्षक बनकर तमाशा देखेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

"मेरे राज्य में मेरे ही नगर में रहकर मुझे ही आदेश देते हो?" राजा नित्यानंद कुछ और बोलने को हुआ, तभी खड्गवर्मा ने झट तलवार निकालकर कहा–"ये बेमतलब की बातें छोड़ दो! तुम्हारी और तुम्हारे राज्य की रक्षा हमने की है। इस वक़्त हम ही राजा हैं।" फिर जंगली योद्धाओं की ओर मुड़कर कहा–"तुम सब नगर के बाहर चले जाओ।"

जंगली योद्धा नगर के द्वार की ओर बढ़े। जीवदत्त ने विघ्नेश्वर पुजारी तथा स्वर्णाचारी को उनके पीछे चलने का आदेश दिया। तब राजा की ओर मुड़कर कहा–"महाराज! आप नगर के द्वार के बाहर जंगली योद्धाओं से युद्ध कर सकते हैं। अपने सैनिकों को साथ लेकर चलिये। हम देख लेंगे कि किनकी विजय होगी! तब हम अपने रास्ते चले जायेंगे।"

राजा नित्यानंद ने अपने सैनिकों को नगर के द्वार की ओर चलने का आदेश दिया। जंगली योद्धा तथा राजा के सैनिक नगर के द्वार को पार कर सामनेवाले मैदान में हथियारों से सन्नद्ध हो आमने-सामने खड़े हो गये। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त विघ्नेश्वर

पुजारी और स्वर्णाचारी के साथ दोनों दलों के बीच खड़े हो गये।

राजा नित्यानंद ने एक बार अपने मंत्री तथा सेनापतियों की ओर देख सर हिलाया तब खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को संबोधित कर कहा—"महान वीरो, तुम लोग अब हट जाओ। मैं अपने सैनिकों को आदेश देने जा रहा हूँ कि वे इन जंगली जानवरों का वध कर डाले।"

जीवदत्त ने जंगली योद्धाओं के नेता से कहा—"सुनते हो? कुछ ही क्षणों में तुम्हारा फ़ैसला होनेवाला है!" फिर राजा से कहा—"महाराज! फिर एक बार सोचिये। यदि जंगली योद्धा हार गये तो उनमें से कुछ लोग मर जायेंगे और बाक़ी लोग जंगल में भागकर मजे से अपने दिन बितायेंगे। लेकिन आप हार जायेंगे तो अपनी गद्दी से हाथ धो बैठेंगे। अगर जान के साथ भाग गये, तो जंगल में कंद-मूल खाकर शेष जीवन बिताना पड़ेगा।"

ये बातें सुनते ही राजा का चेहरा एक दम सफ़ेद हो उठा। मंत्री ने इसे भांप लिया और ऊँचे स्वर में कहा—"महाराज, मैंने पहले ही शायद आप से बताया था कि आपके पिताजी ने मरने के पहले एक बात आप से कहने को मुझ से बतायी थी कि किसी भी हालत में नगर

के द्वार के बाहर ख़ून न बहे, यदि ऐसा हुआ तो उनकी आत्मा को शांति न मिलेगी।"

"हाँ, हाँ! मैं यह बात भूल ही गया। महामंत्री, तुम ने समय पर याद दिलायी। वरना मैं अपने पिताजी की अंतिम इच्छा का भंग करके उनकी आत्मा को अशांत बना देता। अच्छी बात है! सैनिको, तुम लोग नगर के अन्दर चले जाओ।" ये शब्द कहते राजा नित्यानंद सब से आगे नगर के द्वार की ओर बढ़ा।

"इस कमबख़्त कायर को वक़्त पर मंत्री ने अच्छा बहाना बताया।" इन शब्दों के साथ खड्गवर्मा हँस पड़ा।

जंगली योद्धाओं का नेता आगे बढ़ कर जीवदत्त से बोला–"महाशय, हमें आज्ञा दीजिये। बकवास करनेवाले इस राजा तथा उसके सैनिकों को भालों में चुभोकर नगर के द्वार के पास खड़ा कर देंगे।"

"हे क्षत्रिय युवक, आज्ञा दीजिये। इस राजा की मौत पर महा विघ्नेश्वर भी प्रसन्न हो जायेंगे।" पुजारी ने उत्साहपूर्ण स्वर में कहा।

"बकवास बंद करो। तुम्हारी मृत्यु पर भी वे महा विघ्नेश्वर खुश हो जायेंगे।" खड्गवर्मा ने पुजारी को डाँट बतायी और नगरद्वार की ओर देखा।

राजा नित्यानंद अपने सैनिकों के साथ द्वार के पीछे खड़े हो खड्गवर्मा तथा जीवदत्त की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखने लगा। खड्गवर्मा और जीवदत्त के मन में यह संदेह पैदा हुआ कि किसी भी क्षण राजा के सैनिक उन पर हमला कर सकते हैं। यह सोचकर जीवदत्त ने कहा–

"खड्गवर्मा, इस राजा में कायरता के साथ हठ भी कम नहीं है। लगता है कि खून-खराबी होनेवाली है।"

"समान शक्तिवाले दलों के बीच होनेवाला युद्ध अनावश्यक खून खराबी नहीं कहलायगी। यह तो जरूरी लड़ाई ही है! यहाँ पर समझौता के कोई लक्षण नजर नहीं आ रहा है। लड़ाई में वही विजयी होगा, जो बलवान, साहसी और युक्तिवान भी हो। नाहक वक़्त बेकार क्यों करे? अभी मैं फ़ैसला करूँगा कि युद्ध होगा या शांति!" इन शब्दों के साथ खड्गवर्मा एक जंगली योद्धा के हाथ से एक भाला लेकर राजा के सामने जा पहुँचा और बोला–"महाराज! आप इन जंगली योद्धाओं से लड़ने का ख़्वाब देखते से मालूम होते हैं। मेरे एक-दो-तीन कहने के अन्दर आप नगर का द्वार बंद करवा दीजिये या नगर का द्वार पार करके मैदान में आ जाइये।" इन शब्दों के

साथ उसने एक-दो-तीन की गिनती की। खड्गवर्मा के मुँह से तीन शब्द निकलने के पहले ही नगर के द्वार बंद हो गये। जंगली योद्धा विजय-घोष करने लगे।

"शायद राजा में ज्ञानोदय हो गया है। अब हम अपने रास्ते चले जायेंगे।" जीवदत्त ने सुझाया। सब लोग वहाँ से चल पड़े। एक घंटे के अन्दर जंगल में जा पहुँचे। वहाँ पर जंगलियों ने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को बढ़िया दावत दी। पुरुष और स्त्रियों ने मिलकर नाच-गान के द्वारा उनका मनोरंजन किया। सूर्यास्त के दो-तीन घड़ी पहले ही खड्गवर्मा और जीवदत्त जंगलियों से विदा लेकर चल पड़े।

तब तक उनके साथ सुरक्षित रहनेवाले विघ्नेश्वर पुजारी तथा स्वर्णाचारी खड्गवर्मा और जीवदत्त को वहाँ से रवाना होते देख उनका अनुसरण करते हुए बोले-"महाशय, क्या हमें यहीं छोड़कर जा रहे हैं? सूर्यास्त के पहले ही ये जंगली योद्धा हमारी जान लेकर छोड़ेंगे।"

"खड्गवर्मा! इन दोनों का क्या करें?" जीवनदत्त ने पूछा।

"इन जंगलियों के सामने अपना निर्णय बताना ठीक न होगा। इन्हें अपने साथ सामने दिखाई देनेवाले उन पहाड़ों तक ले जायेंगे, तब तक सोचेंगे कि क्या करना होगा! विन्ध्याचल तक हम इन जंगली बिलावों को अपने साथ तो नहीं ले जा सकते हैं न?" खड्गवर्मा ने कहा।

"साहब! अगर हम सचमुच जंगली बिलाव ही होते, तो कम से कम इस जंगल के किसी खरगोश या जंगली मुर्गे को खाकर आराम से जीते! मनुष्य बनने के कारण ही ये सारी आफ़तें आ पड़ी हैं। उस महा विघ्नेश्वर ने स्वप्न में दर्शन देकर मेरा तबाह कर डाला।" ये शब्द कहते विघ्नेश्वर पुजारी रो पड़ा।

"अब भी कुछ बिगड़ा नहीं। तुम दोनों अक्लमंद हो, इसलिए जंगली बिलावों की भाँति इस जंगल में जिओ। नहीं तो

"तुम लोग हमारे साथ कितनी दूर चल सकते हो? हम विंद्याचल की ओर जा रहे हैं। रास्ते में पड़नेवाले भयंकर विघ्नों से हम अपनी रक्षा करने में ही परेशान हो उठेंगे, ऐसी हालत में तुम्हारी जिम्मेदारी हम अपने ऊपर कैसे ले सकते हैं?" जीवदत्त ने कहा।

"साहब, हम आपके साथ चलते रहेंगे रास्ते में कहीं कोई शहर या गाँव पड़ा तो हम वहीं ठहर जायेंगे। आप हमें इस जंगल के बीच छोड़ गये तो समझ लीजिये कि ये जंगली लोग हमारा खातमा कर डालेंगे।" विघ्नेश्वर पुजारी ने कहा।

एक और राक्षस हाथी बनाकर एक दूसरे राज्य पर हमला करो।" खड्गवर्मा ज़ोर से हँसते हुए बोला।

"अच्छी बात है! फिलहाल हमारे साथ ही रह जाओ। फिर सोचेंगे कि क्या किया जाना चाहिए।" जीवदत्त ने कहा।

इसके बाद वे चारों उत्तरी दिशा में बढ़े और सूर्यास्त तक जंगल के एक पहाड़ी प्रदेश में पहुँचे। उस रात को वहाँ पर रसोई बनाकर भोजन करने के बाद पेड़ों पर लेट गये। दूसरे दिन सवेरे जब खड्गवर्मा और जीवदत्त फिर से रवाना हुए तब पुजारी और स्वर्णाचारी ने उनके साथ चलने की अनुमति माँगी।

उन दोनों को डरते देख खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को उन पर दया आयी। इसके बाद दो दिन तक किसी भी प्रकार की उलझन के बिना चारों जंगल में यात्रा करते रहे। तीसरे दिन सवेरे सूर्योदय के वक़्त जीवदत्त और खड्गवर्मा पेड़ों पर लेटे ही हुए थे कि दूर पर एक आदमी की चिल्लाहट और बाघ का गर्जन सुनाई दिया।

उस गर्जन को सुनते ही दोनों क्षत्रिय युवक पेड़ों की डालों के बीच से उठ बैठे। पुजारी और स्वर्णाचारी पेड़ों की डालों को पकड़े डर के मारे काँपने लगे।

"जीवदत्त! यह कैसे आश्चर्य की बात है! क्या वह आदमी पागल तो नहीं हो

गया? उसके हाथ में कोई हथियार भी नहीं है। वह बाघ के बच्चों को बगल में दबाये चिल्लाता क्यों है? उसकी चिल्लाहट को बाघ सुन रहा है? क्या तुमने बाघ के गर्जन को सुना?" खड्गवर्मा ने पूछा।

जीवदत्त ने सामने देखा, एक युवक चिथड़ों वाले कपड़े पहन बाघ के दो बच्चों को उठाये भागते चिल्ला रहा है-"बाघ, आ जा! आ जा, देखूं!"

"खड्गवर्मा! पहले हमें उस युवक को बचाना है! इसके बाद सोचेंगे कि हमें क्या करना है?" ये शब्द कहते जीवदत्त पेड़ पर से नीचे उतरने लगा। उसी समय बाघ का गर्जन निकट सुनाई दिया।

"यह कोई बेचारा मरने जा रहा है। बाघिन आकर उस पर कूदने जा रही है!" इन शब्दों के साथ खड्गवर्मा तलवार हाथ में लिये पेड़ से कूद पड़ा और उस युवक की ओर दौड़ा।

"बेचारी इस बाघिन को मत मारो। वह अपने बच्चों को छुड़ाने की कोशिश कर रही है।" जीवदत्त ने खड्गवर्मा को सचेत किया और पेड़ से उतरकर युवक की ओर भाग खड़ा हुआ। खड्गवर्मा और जीवदत्त उस प्रदेश में पहुँचने ही वाले थे, तभी युवक के निकट की झाड़ियों के पास छलांग मारते बाघिन आ पहुँची। युवक ने

बाघिन को देखते ही चिल्लाकर कहा-"आ जा, तुम आ गयी? एक ही वार में मेरा गला काट कर मुझे मार दो।" ये शब्द कहते वह बाघिन की ओर दौड़ पड़ा।

शायद बेहथियार वाले युवक को उसकी ओर निडर बढ़ते देख बाघिन को भी भय और आश्चर्य हुआ होगा। वह यह सोचते पल भर के लिए वहीं खड़ी रह गयी कि युवक पर हमला करे या नहीं। उसी वक़्त जीवदत्त आ पहुँचा। युवक के हाथ से बाघ के बच्चे गरजते हुए उसकी पकड़ से छूटने के लिए छटपटाने लगे।

इस दृश्य को देखते ही बाघिन रोष में आ गयी और गरजते हुए युवक पर कूद

पड़ी। तुरंत जीवदत्त ने अपने दण्ड से सारी ताक़त लगाकर बाघिन पर प्रहार किया और उसे दूर फेंकते हुए बोला– "खड्गवर्मा, बाघिन बेहोश हो गयी है। उसके उठने के पहले किसी जंगली लता से उसे पेड़ से बांध दो।"

खड्गवर्मा ने तत्काल पेड़ से लटकने वाली एक लता काट दी और एक छोर से बाघिन का गला बाँध दिया और दूसरे छोर को पेड़ से बाँध दिया।

"महाशय! आपने मुझे इस बाघिन से बचाया, लेकिन मुझे इससे भी भयंकर मौत का शिकार बना रहे हैं?" रुद्ध कंठ से युवक ने कहा।

"अरे भाई, मरने के लिए तो अनेक मार्ग हैं! मरना चाहते हो तो इस पेड़ पर फाँसी क्यों नहीं लगाते?" खड्गवर्मा ने क्रोध भरे स्वर में पूछा।

"बड़ों का कहना है कि आत्महत्या करना महान पाप है! इसलिए इस बाघिन का आहार बनकर..."

"बड़े लोग क्या यह नहीं मानते कि अब तुम जो काम करने जा रहे थे, वह आत्महत्या है! तुम कौन हो? पगले हो या होश में हो?" खड्गवर्मा ने युवक से पूछा।

"खड्गवर्मा, यह तुम क्या पूछते हो? थोड़ा शांत हो आओ!" जीवदत्त ने खड्गवर्मा को समझाकर युवक से पूछा– "भाई, यह बताओ कि तुम्हें कैसी तक़लीफ़ है? तुम्हें भयंकर मौत किसके द्वारा होने वाली है?"

युवक ने भय के मारे काँपते हुए एक बार चारों तरफ़ नज़र दौड़ा कर देखा और वह जवाब देने ही जा रहा था कि तभी पेड़ों की आड़ में से गैंड़े पर सवार एक व्यक्ति ने आगे बढ़कर कहा–"अरण्यपुर के गणाचारी के हाथों में इस युवक की बुरी मौत होने जा रही है।" इसके बाद वह चिल्ला पड़ा–"अरे, सुनो! तुम लोग इन सब को घेर लो, ताकि ये भाग न जायें।"

(और है)

सौंदर्य का दान

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा– "राजन, तुम बड़े प्रयास के साथ जो कार्य साधना चाहते हो, उसे कोई आसानी से साध ले तो जयंत की भांति तुम्हें भी होना पड़ेगा! तुम्हें श्रम को भुलाने के लिए जयंत की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: अरावली पहाड़ों के प्रदेश में अलकापुरी नामक राज्य पर राजा चित्रसेन शासन करता था।

राजा चित्रसेन के एक अनुपम सुंदर कन्या थी–जिसका नाम जगन्मोहिनी रखा गया था। उसके साथ विवाह करने के लिए अनेक राजकुमार उत्सुक थे। परंतु राजा जयंत ने जगन्मोहिनी को स्वेच्छा पूर्वक अपने पति का चुनाव करने के लिए

वेताल कथाएँ

आयी। उसे अपने रूप को देख डर लगा। पहले उसका शरीर सोने के रंग का था, अब वह लोहे जैसा काला था। अपनी सहेलियों के साथ वह भी रोती-कलपती घर लौट आयी।

राजकुमारी के इस परिवर्तन को देख उसके माता-पिता घबरा गये। दूसरे दिन राजकुमारी के साथ विवाह करने के लिए स्वयंवर में भाग लेने अनेक राजकुमार आनेवाले हैं! स्वयंवर कैसे मनाया जाय, यह बात राजा की समझ में नहीं आयी।

राजा ने सच्ची बात मंत्री से बतायी और उसकी सलाह मांगी। मंत्री ने तुरंत

स्वयंवर का प्रबंध किया और सभी देशों के राजाओं को निमंत्रण भेजा।

स्वयंवर के एक दिन पूर्व जगन्मोहिनी अपनी सखियों के साथ वन-विहार करने गयी और वहाँ एक सुंदर सरोवर में जगन्मोहिनी के मन में स्नान करने की इच्छा हुई। उसकी सहेलियाँ बराबर समझाती रहीं कि हमें अन्धेरे फैलने के पहले घर पहुँचना है, लेकिन अपनी सहेलियों की बातों की परवाह किये बिना ही जगन्मोगिनी तीन बार डुबकी लगाकर खड़ी हो गयी।

राजकुमारी के उस रूप को देख उसकी सभी सहेलियाँ एक दम चिल्ला उठीं। जगन्मोहिनी घबराकर सरोवर से बाहर

राज वैद्यों को बुला भेजा और उसकी चिकित्सा करने का आदेश दिया। राज वैद्यों ने सारा हाल जानकर कहा–" महामंत्री जी, बीमारी का तो इलाज होता है, मगर यह कोई शाप मालूम होता है। इसका इलाज करना संभव नहीं है।"

मगर एक घनवैद्य ने राजा से कहा–" महाराज, मेरी दृष्टि में यह एक बीमारी ही है। लेकिन इसका इलाज मैं नहीं जानता। समस्त प्रकार की शारीरिक बीमारियों के लिए एक अद्भुत औषध का उल्लेख हमारे प्राचीन वैद्य ग्रन्थों में किया गया है। वह औषध है पंच वर्ण संजीवी नामक सरोवर का जल। मैं यह नहीं

जानता कि वह सरोवर कहाँ पर है।" ये बातें सुनकर राजा निराश हुआ।

दूसरे दिन सवेरे सभी देशों के राजकुमार मुहूर्त से पहले सभा-भवन में आ बैठे और जगन्मोहिनी की प्रतीक्षा करने लगे। मंत्री ने खड़े होकर पिछले दिन की अवांछित घटना का समाचार सुनाया और कहा–"राजकुमारी का इस समय जो रूप है, उसे देखकर कोई भी राजकुमार उस के साथ विवाह करने को तैयार न होगा। मगर उसके पूर्व रूप को प्राप्त होने के लिए एक उपाय हमें मालूम हो गया है। सुना है कि कहीं पंचवर्ण संजीवी सरोवर है। उसके जल का सेवन करने पर राजकुमारी को पूर्व रूप प्राप्त होगा। आप में से जो राजकुमार उस सरोवर का जल लाकर राजकुमारी के विकृत रूप को दूर करेगा, उसके साथ राजा राजकुमारी का विवाह करके अपना राज्य भी सौंप देंगे।"

यह समाचार सुनने पर केवल दो राजकुमार रह गये, उनमें एक मालव देश का युवराज जयंत था। जयंत यह शपथ करके चला गया–"चाहे वह सरोवर कहीं भी हो, ढूँढ़कर मैं उसका जल लाऊँगा और राजकुमारी के साथ विवाह करूँगा।"

दूसरा राजकुमार विजयपुरी का युवराज विजय था। विजय ने सोचा कि राजकुमारी जिस सरोवर में नहाकर अपने पूर्व रूप को खो बैठी है, उसी सरोवर के पास उसके रूप-परिवर्तन का कारण जान लिया जा सकता है। यह सोचकर विजय ने उस सरोवर के मार्ग का पता लगाया और चल पड़ा।

इस बीच पंचवर्ण संजीवी सरोवर की खोज में जयंत चल पड़ा और लगातार यात्रा करके उस रात को भयंकर जंगल के बीच स्थित एक कालीमाता के मंदिर में पहुँचा। आसपास के पेड़ों से फल तोड़कर भूख मिटायी और वह रात उसी

मंदिर में बिताने का निश्चय कर लिया। जयंत मंदिर में लेट कर जाग ही रहा था कि तभी एक भालू गरजते हुए मंदिर में घुस पड़ा और जयंत पर हमला कर बैठा। जयंत झट उठ बैठा और तलवार से वार करके उसे मार डाला। भालू के मरते ही गायब हो गया और उसकी जगह एक मुनि खड़ा हुआ दिखाई दिया। मुनि ने कहा—"बेटा, मैं अपने गुरुजी के शाप का शिकार हो इस रूप में था, तुमने मुझे शाप से मुक्त किया। तुम मुझसे जो सहायता चाहते हो, मांगो।"
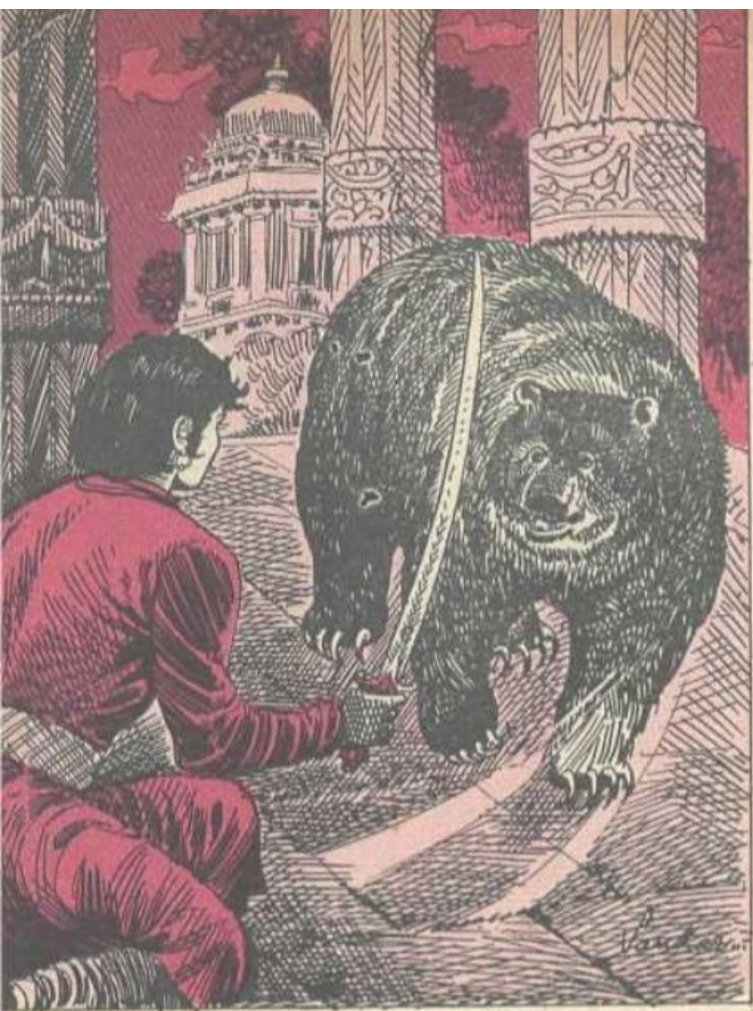
"मुनिवर, मैं पंचवर्ण संजीवी नामक सरोवर से जल लाने के हेतु घर से निकल आया हूँ। मुझे वहाँ तक पहुँचने का रास्ता बताइये।" जयंत ने पूछा।

"बेटा, वह सरोवर मेरु पर्वत पर है। शायद वहाँ तक पहुँचने के लिए तुम्हारी उम्र पर्याप्त न होगी।" मुनि ने कहा।

"मुनिवर, मैं इस प्रयत्न में मरने के लिए भी तैयार हूँ, लेकिन मैं अपने प्रयत्न को छोड़ नहीं सकता।" जयंत ने कहा।

मुनि जयंत के दृढ़ निश्चय पर प्रसन्न हो उसे अपनी पादुकाएँ देते हुए बोला—"बेटा, तुम इनकी मदद से आकाश मार्ग पर उस सरोवर तक पहुँच सकते हो। तुम्हारे काम के समाप्त होते ही ये पादुकाएँ लौटकर मेरे पास आ जायेंगी। लेकिन ख्याल रखो कि इनका प्रयोग तुम दूसरे काम के लिए न करो।" ये शब्द कहकर मुनि अदृश्य हो गया।

जयंत उन पादुकाओं को पहनते ही आकाश मार्ग में मेरु पर्वत की ओर उड़ चला गया। इस बीच विजय जंगल के बीच स्थित एक सरोवर में गया। सारा दिन निकट के प्रदेश में बिताया। सवेरा होते ही उसने देखा कि एक मुनि सरोवर के पास आया और स्नान करके चलने को हुआ।

मुनि का रूप-परिवर्तन न होते देख विजय को अत्यंत आश्चर्य हुआ। उसने मुनि के निकट जाकर कहा—"मुनिवर, आप

मेरी रक्षा करें।" इन शब्दों के साथ विजय ने मुनि के चरण पकड़ लिये।

"डरो मत बेटा। तुम कौन हो? तुम्हें कैसी विपत्ति आ गयी है?" मुनि ने विजय से पूछा।

"मुनिवर! इसी सरोवर में स्नान करके एक राजकुमारी अपने सौंदर्य को खो बैठी है। आपने भी इसी सरोवर में स्नान किया, मगर आपके रूप में कोई परिवर्तन नहीं आया। उस राजकुमारी को पूर्व रूप प्राप्त करने का उपाय जानते होंगे। कृपया आप मुझे यह रहस्य बताने का अनुग्रह करें!" विजय ने कहा।

"तुम सच कहते हो, बेटा! मैंने अपने तपोबल से इस सरोवर की सृष्टि की है। मैंने ही ऐसा प्रबंध किया कि इस सरोवर में जो स्नान करेगा, उसका विकृत रूप होगा। क्योंकि मुझे यह पसंद न था कि हर कोई इस तालाब में नहाकर इसे गंदा करे। अगर तुम अपने सौंदर्य को राजकुमारी को सौंपने के लिए तैयार हो जाओ तो मैं तुम्हें इस सरोवर में स्नान करने दूँगा, लेकिन तुम्हारा रूप विकृत होगा। तुम्हें स्वीकार है?" मुनि ने समझाया।

"मुझे स्वीकार है, मुनिवर!" ये शब्द कहकर विजय सरोवर में उतर पड़ा। सरोवर में स्नान कर अपने सौंदर्य को खोकर राजमहल की ओर चल पड़ा।

राजकुमारी को अपने पूर्व रूप को पाने पर उसके माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए। इसी समय विकृत रूप को प्राप्त विजय लौट आया और उसने सारा वृतांत कहा।

इतने में जयंत जल के साथ लौट आया और बोला–"मैंने अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति की। मैं इस जल के साथ राजकुमारी को अपना पूर्व रूप दिलाकर उसके साथ विवाह करूँगा और राज्य ग्रहण करूँगा।"

राजकुमारी ने जयंत के सामने आकर कहा–"आपका श्रम बेकार गया है। मुझे तो अपना पूर्व रूप प्राप्त हो गया है।"

इसके बाद यह समस्या पैदा हुई कि जगन्मोहिनी का विवाह किस के साथ करे, मगर यह समस्या जगन्मोहिनी ने स्वयं हल की। उसने कहा कि जयंत बड़ी मुसीबतों का सामना करके पंचवर्ण संजीवीवाले सरोवर से जल लाया है, आतः उसे छोड़ विजय के साथ विवाह करना उचित नहीं है।

इस पर मंत्री ने कहा–"जयंत, तुम्हीं बताओ, पंचवर्ण संजीवीवाला सरोवर कहाँ पर है? तुमने स्वयं कहा था कि उसका पता किसी को नहीं है। ऐसी हालत में तीन दिन के अन्दर तुम उस सरोवर का जल कैसे ला सके!"

"मंत्री महोदय, भले ही राजकुमारी मेरे साथ विवाह न करे, मगर यह कहना मेरे प्रति अन्याय होगा कि मैं धोखा दे रहा हूँ।" इन शब्दों के साथ जयंत जो जल सरोवर से साथ लाया था, उसे विजय के हाथ में दिया।

विजय उस जल को पीकर पूर्व रूप को प्राप्त कर सका। तब उसने एक बार सब की ओर विजय सूचक दृष्टि से देखा और अपने देश को लौट गया।

इसके बाद जगन्मोहिनी का विवाह विजय के साथ धूमधाम से मनाया गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, जयंत के इस व्यवहार का क्या कारण है? वह जो जल लाया, उससे उसने

साबित किया कि पंचवर्ण संजीवीवाले सरोवर का ही जल है। ऐसी हालत में जगन्मोहिनी के साथ विवाह करने का उसने हठ क्यों नहीं किया? उलटे वह जो जल लाया था, उसे उसने अपने प्रत्यर्थी को क्यों दिया? जगन्मोहिनी ने यह हठ क्यों किया कि वह विकृत रूपवाले विजय के साथ ही विवाह करेगी। इन प्रश्नों का सही समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"राजकुमारी का विजय के साथ विवाह करने का निर्णय करना उचित ही है। पंचवर्ण संजीवी का जल उसे सौंदर्य देने का एक साधन ही है। प्रतिद्वन्द्वी का लक्ष्य राजकुमारी को पूर्व रूप दिलाना ही है। यह काम विजय ने किया। इस प्रयत्न में विजय कुरूप बन गया। ऐसी हालत में उसके साथ विवाह करने से इनकार करना अधर्म कहलायगा। अलावा इसके जयंत और विजय के बीच बड़ा अंतर है। जयंत केवल यश चाहनेवाला है। उसकी दृष्टि में राजकुमारी के साथ विवाह करने की अपेक्षा संजीवीवाला जल लाना ज़्यादा यश का कारण है। अपने यश में कंलक लगने से बचने के लिए ही उसने संजीवी जल विजय को दिया है। इससे उसकी कोई हानि नहीं हुई। विजय के कुरूप रहते ही उसके साथ विवाह करने के लिए राजकुमारी तैयार हो गयी थी। अब उसके पूर्व रूप को प्राप्त होने पर उसके साथ विवाह करने से इनकार नहीं कर सकती। यह बात जयंत अच्छी तरह से जानता था। विजय के मन में राजकुमारी को पूर्व रूप दिलाने की प्रबल इच्छा थी। इसी वास्ते उसने मुनि के चरण तक पकड़े। अपने सौंदर्य का त्याग किया। अतः उसका लक्ष्य अटल है। इसलिए यह स्पष्ट है कि विजय ही राजकुमारी के योग्य वर है।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

अण्ड राक्षस

स्वर्णगृह राज्य की राजधानी के उद्यान में एक दिन सवेरे एक अण्डा निकल आया। मालियों ने देखा और राजा को इसकी ख़बर दी। राजा ने उस अण्डे को राजमहल में मंगवाया। वह दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आख़िर एक आदमी के क़द का ऊँचा हो गया। एक दिन उसमें से एक छोटा राक्षस निकल आया।

राजा उसे देख प्रसन्न हुआ और अंतःपुर में उसके पालन-पोषण का प्रबंध किया। वह रोज़ दो-तीन इंच के हिसाब से बढ़ता गया और जल्द ही सात फुट लंबा हो गया।

राजा तो उसे भर पेट खिलाने को तैयार था, मगर वह राक्षस मनुष्यों को खाने के प्रयत्न में लग गया। उसे नियंत्रण में रखने के लिए राजा ने दस-बारह सिपाहियों को नियुक्त किया। मगर दिन बीतने के साथ राजा को सिपाहियों की संख्या बढ़ानी पड़ी। इसलिए लाचार हो राजा ने राक्षस को एक कमरे में बन्द कराया, लेकिन इससे राक्षस की उद्दण्डता और बढ़ गयी।

एक दिन राजा ने राक्षस के पास जाकर समझाया—"अरे, मैं तुम को पल भर में मरवा डाल सकता हूँ, लेकिन मैं तुम्हें मार डालना नहीं चाहता, इसलिए छोड़ देता हूँ, तुम राक्षसों के पास चले जाओ।"

राक्षस राजा के प्रति श्रद्धा रखता था। इस कारण उसने कहा—"राजन्, आप मुझे क़ैद से छुटकारा दिला दीजिये। मैं आपके पास ही रहूँगा। कहीं न जाऊँगा।"

राजा की समझ में न आया कि क्या किया जाय। उस समय राजदरबार के जादूगर ने राजा को एक युक्ति बतायी।

इस पर राजा ने फिर राक्षस के पास जाकर कहा—"मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा।

ए. सी. सरकार, जादूगर

उसमें अगर तुम सफल निकले तो मैं तुम्हें स्वेच्छा के साथ घूमने की आजादी दूँगा। नहीं तो तुम्हें राक्षसों के पास जाना पड़ेगा।" इस पर राक्षस ने पूछा– "वह परीक्षा कैसी है, महाराज!"

"वह तो एक छोटी-सी परीक्षा है। मुर्गी के अण्डे को तुम्हें मेज़ पर सीधे खड़ा करना होगा। अगर तुम खड़ा कर सके तो मेरे राज्य में स्वेच्छा के साथ घूम-फिर सकते हो। नहीं तो तुम्हें हमारे देश को छोड़ना पड़ेगा। क्या यह शर्त तुम्हें स्वीकार है?" राजा ने पूछा।

"मैं स्वयं अण्ड राक्षस हूँ। अण्डे तो मेरे आदेश को मानते हैं। इसलिए आप मेरी परीक्षा लीजिये।" राक्षस ने कहा।

"तुम अपनी बात पर अटल रहोगे न?" राजा ने पूछा।

"महाराज! अण्ड राक्षस कभी अपने वचन से मुकरते नहीं।" राक्षस ने गर्व से कहा। इसके बाद राक्षस को मुक्त करके राजा के महल में लाया गया। खाने की मेज़ पर एक ओर राक्षस और दूसरी ओर राजा बैठ गये। एक अण्डा मँगवाकर राजा ने राक्षस के हाथ में दिया। उस अण्डे को सीधा खड़ा करने की राक्षस ने कई बार कोशिश की। मगर हर बार वह गिरता गया।

राजा ने उस अण्डे को लेकर मेज़ पर खड़ा करते हुए कहा–"देखा है न, तुम परीक्षा में हार गये! अब मेरे देश को छोड़कर राक्षसों के पास चले जाओ।"

राक्षस वचन का पक्का था। वह उस देश को छोड़कर चला गया। इसके बाद उसकी कोई खबर न मिली।

"महाराज! आप मुर्गी के अण्डे को सीधे कैसे खड़ा कर सके?" मंत्री ने आश्चर्य के साथ पूछा।

राजा ने मेज़ पर बिछाये गये कपड़े को हटाया, कपड़े के नीचे नमक का छोटा-सा ढेर था। उसी पर अण्डा खड़ा हो गया था।

सच्चा आस्तिक

एक गाँव में अकाल आया। वर्षा नहीं हुई। सभी गाँववालों ने एक दिन मंदिर में जाकर वर्षा के वास्ते जप, तप और होम करने का निर्णय किया।

उस दिन सबेरे ही सभी गाँववाले मंदिर में चले गये। उनके साथ एक छोटा सा लड़का छाता लेकर चल पड़ा।

"अरे, तुम अपने साथ छाता क्यों लाते हो? आसमान में बादल भी मंडरा नहीं रहे हैं!" बड़ों ने उससे पूछा।

"यह सच है कि इस वक्त बादल नहीं हैं, मगर जप, तप और होम करने से वर्षा होगी। उस वक्त हम लोग उस भयंकर वर्षा में छाते के बिना कैसे घर लौट सकते हैं।" लड़के ने जवाब दिया।

उसके गाँव के लोगों में प्रार्थनाओं पर विश्वास रखनेवाला वही एक लड़का था।

बेवकूफ़ औरत

हंगेरी देश के एक गाँव में एक किसान था। उसके एक बेवकूफ़ पत्नी थी। उसका विश्वास था कि वह हर काम अपने पति से ज़्यादा अच्छा कर सकती है।

एक वर्ष खेत की कटाई समाप्त करके किसान उस अनाज को बेचने के लिए हाट में ले जाना चाहता था, तब उसकी पत्नी बोली–"तुम बिक्री की बात ठीक से नहीं जानते, मुझे साथ ले जाओ तो मैं और ज़्यादा दाम पर बेच सकती हूँ।"

"तब तो तुम ही जाकर बेच आओ। मैं भी क्यों साथ चलूँ?" किसान ने जवाब दिया। किसान की पत्नी ने अनाज के बोरे गाड़ी पर लदवा दिये, अपने पति से पूछा–"मैं अनाज किस भाव पर बेचूँ?"

"बाजार का जो भाव होगा, उसी भाव पर बेच दो।" किसान ने कहा।

किसान की पत्नी बाजार में गयी। एक चालाक व्यापारी ने उसके पास आकर पूछा–"तुम अनाज कैसे बेचती हो?"

"बाजार का जो भाव होगा, उसी भाव पर बेचती हूँ।" किसान की पत्नी ने कहा।

"अच्छी बात है! मैं अभी बाजार के भाव का पता लगाकर लौटता हूँ।" यह कहकर व्यापारी वहाँ से चला गया और थोड़ी देर बाद लौटकर बोला–"इस वक़्त बाजार का भाव ऐसा है कि आधा माल कर्ज पर देना और बाक़ी आधा किश्तों पर चुकाने का है।"

"ठीक है, ऐसे ही बेचूँगी। लेकिन रुपये कब मेरे हाथ लगेंगे?" किसान की पत्नी ने पूछा।

"अगले हफ़्ते में जब फिर बाज़ार लगता है, तब!" व्यापारी ने कहा।

हंगेरी लोक कथा

"लेकिन हम उस दिन एक दूसरे को कैसे पहचाने?" किसान की पत्नी ने पूछा।

"तुम ऐसा करो, मेरा पुराना कोट ले लो और तुम अपनी ऊनी शाल मुझे दे दो। हमें अपनी-अपनी चीज़ों को पहचानने में कोई तक़लीफ़ न होगी!" व्यापारी ने समझाया। किसान की पत्नी राजी हो गयी। अपनी ऊनी शाल के साथ अनाज को भी व्यापारी के हाथ सौंप दिया। उसका पुराना कोट ले दर्प के साथ घर लौट आयी और अपनी करनी की बड़ाई करने लगी।

किसान को अपनी पत्नी पर बड़ा क्रोध आया और गरजकर बोला–"बेवकूफ़ औरत! तुम जैसी एक मूर्ख औरत को जब तक मैं न देखूँ तब तक मैं घर न लौटूंगा।" ये शब्द कहकर किसान घर से चल पड़ा। वह इस बात पर यक़ीन न कर पाया कि उसकी पत्नी से बढ़कर मूर्ख औरत इस दुनिया में हो सकती है। वह चलते-चलते एक घने जंगल में पहुँचा। वहाँ पर एक झोंपड़ी दिखाई दी।

किसान ने उस झोंपड़ी के पास जाकर दर्वाजा खटखटाया तो एक अधेड़ उम्र की औरत ने दर्वाजा खोला और पूछा–"बेटा, तुम कौन हो? कहाँ से आते हो?"

किसान ने उस औरत की अक़्ल की जाँच करने के ख्याल से कहा–"बूढ़ी माँ, मैं अभी अभी परलोक से आ रहा हूँ।" वह औरत चकित न हुई बल्कि उत्सुकता से बोली–"तब तो बेटा, तुम मेरे पुत्र को पहचानते हो?"

उस औरत की मूर्खता की परीक्षा लेने के ख़्याल से किसान ने कहा–"क्यों नहीं जानता बूढ़ी माँ? बेचारा वह चिथड़े पहने अपनी गाड़ी को ख़ुद खींचते बड़ा परेशान है।"

"ओह! ऐसी बात है, बेटा! क्या तुम फिर वहाँ जाओगे?" बूढ़ी औरत ने पूछा।

"हाँ, कल सुबह तक मुझे तो वहाँ पर पहुँचना है।" किसान ने उत्तर दिया।

"तब तो तुम मेरी एक मदद करो, बेटा! दीपावली के समय मैंने जो मिठाइयाँ बनायीं, वे अभी तक बच रही हैं। मैंने अपने पति से छिपा कर थोड़े रुपये भी बचा रखे हैं। ये सब ले जाकर तुम मेरे बेटे को दे दो। हाँ, मैं भूल ही गयी। मेरे पति किसी क़ो दगा देकर ऊनी शाल उड़ा लाया है। इसे भी तुम मेरे बेटे को दे दो।" उस औरत ने कहा।

किसान ने अपने मन में सोचा कि वह जहाँ पहुँचना चाहता था, वहाँ बिना किसी तरह की मुसीबत के पहुँच गया है। उसने थोड़ी देर विश्राम किया। रसोई के बनते ही सारी चीज़ें ले लीं, तब उस औरत ना अपने बेटे के वास्ते एक घोड़ा भी दिया, उस पर सवार हो किसान चल पड़ा।

किसान बूढ़ी के घर से चला ही गय था कि तभी अनाज का व्यापारी अ पहुँचा। बूढ़ी ने अपने पति को सारी कहानी सुनायी। व्यापारी अपने सर पीटते हुए बोला–"अरी अभागिन! तेरी अक़्ल

कहा चरने गयी थी?" इस तरह पत्नी को गालियाँ देकर वह घर से भाग चला।

किसान ने भांप लिया कि उसके पीछे कोई दौड़ता आ रहा है। वह झट अपने घोड़े को जंगल के भीतर ले गया और एक पेड़ से बांध दिया। फिर वह रास्ते पर आ पहुँचा और एक झुके हुए पेड़ से कंधा लगाकर इस तरह खड़ा हो गया, मानों गिरनेवाले पेड़ को रोकने की कोशिश कर रहा हो। थोड़ी देर में अनाज का व्यापारी वहाँ पर आया और उसने किसान से पूछा–"क्या इस रास्ते से कोई घुड़सवार चला गया?"

"चला तो गया, मगर तुम उसके साथ झगड़ा मत मोल लेना, क्योंकि वह तुमसे ज़्यादा बलवान है।" किसान ने समझाया।

"क्या वह तुमसे भी ज़्यादा मजबूत है?" व्यापारी ने फिर पूछा।

"नहीं" किसान ने जवाब दिया।

"तुम जाकर उसे पकड़ लाओ। मैं तुम्हें रुपये दूँगा।" व्यापारी ने पूछा।

"मैं कैसे जा सकूँगा? हमारे परिवार पर यह शाप लगा है कि अगर मैं इस पेड़ को गिरने से थाम न लूँ तो मेरा परिवार तबाह हो जायगा।" किसान ने कहा।

"तुम्हारे लौटने तक इस पेड़ के गिरने से मैं थाम लूँगा। उस कमबख़्त को तुम जल्दी पकड़ लाओ। उसने मेरी औरत को दगा दिया है।" इन शब्दों के साथ व्यापारी ने पेड़ से अपना कंधा लगाया।

इसके बाद किसान जंगल में चला गया, पेड़ से घोड़ को खोल सीधे अपने घर पहुँचा और अपनी पत्नी से बोला–"तुम यह समझ लो कि इस दुनिया में तुमसे भी ज़्यादा बेवकूफ़ औरतें हैं। इसलिए मैं घर लौट आया हूँ।"

"मैंने यह बात तुमसे कभी बतायी थी। तुम इस तरह बोलते हो, मानों मैं ही एक बेवकूफ़ औरत हूँ।" किसान की पत्नी ने कहा।

"हाँ, हाँ! तुमने यह बात बड़ी अक़्ल की बतायी!" किसान ने कहा।
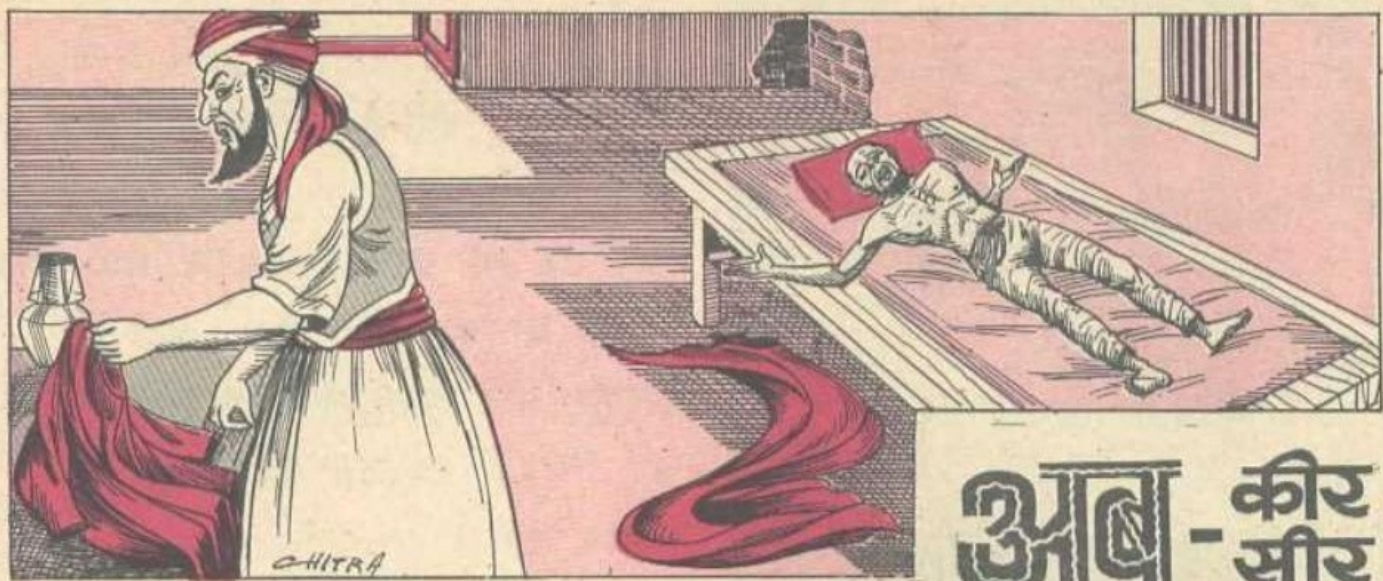
अबू-कीर सीर

[३]

रंगरेज अबू कीर जब अबू सीर का सारा धन लेकर भाग गया, तब वह तीन दिन तक लगातार बेहोश पड़ा रहा। इन तीनों दिनों में कोई भी उस कमरे से न बाहर आया और न भीतर ही गया। इसे देख सराय के दरबान ने सोचा– "ये लोग कहीं कमरे का किराया चुकाये बिना भाग तो नहीं गये?" यह सोचकर उसने कमरे का दर्वाज़ा ढकेलकर भीतर झाँका। उसने देखा कि अबू सीर कमज़ोर हो मरने की हालत में है। वह कराह रहा है।

"भाई, तुम्हें क्या हो गया? तुम्हारा दोस्त कहाँ?" दर्बान ने अबू सीर से पूछा।

"अल्लाह जाने कि मेरा यह हाल क्यों हो गया है? अभी-अभी मैं होश में आया हूँ। मैं यह भी नहीं जानता कि कितने दिनों से इस हालत में पड़ा हुआ हूँ। मुझे तो बड़ी प्यास लगी है। मेरी रुपयों की थैली में से पैसे लेकर खाने की चीजें ला दो! तुम्हारी मेहर्बानी होगी।" अबू सीर ने नीरस स्वर में कहा।

दर्बान ने थैली को टटोलकर देखा, पर उसमें से एक भी पैसा हाथ न लगा। तब उसने सोचा कि इस नाई को उसके दोस्त ने लूट लिया है। उसने सांत्वना देते हुए कहा–"तुम अपने खाने-पीने की चिंता न करो। मैं देख लूँगा।" इसके बाद उसने थोड़ी-सी कांजी बनायी और अबू सीर को पिलाकर उसे कंबल ओढ़ा दिया।

इस तरह दो महीने तक दर्बान ने अबू सीर की सेवा की और अपने हाथ से ख़र्च करके उसे बचाया।

"अल्लाह की मेहर्बानी हो तो मैं तुम्हारी मेहर्बानी का बदला चुका लूँगा। अपनी ज़िंदगी में कभी तुम्हारा ऋण चुका नहीं सकता, अल्लाह ही चुका सकता है।" अबू सीर ने दर्बान से कहा।

"अल्लाह का अनुग्रह यही है कि तुम मरते मरते बच गये।" दरबान ने बताया।

इसके बाद अबू सीर अपनी हजामत की पेटी लेकर शहर में गया। चलते-चलते वह अबू कीर के रंगरेजी के कार्खाना के पास जा पहुँचा। उस कारखाने के बाहर सुखाये गये रंग-बिरंगी वस्त्रों को देखने के लिए एक बड़ी भीड़ लग गयी थी।

"इतने लोग यहाँ पर क्यों जमा है? इसकी वजह क्या है?" अबू सीर ने भीड़ में से एक से पूछा।

"यह तो दरबारी रंगरेज अबू कीर साहब का कारखाना है। यहाँ पर वे अद्भुत और रहस्यपूर्ण प्रयोग करके कपड़ों पर विचित्र रंग रंग देते हैं।" एक ने जवाब दिया।

यह जानकर अबू सीर का दिल फूल उठा कि उसके दोस्त के दिन फिर गये हैं। उसने मन में सोचा–"अल्लाह की मेहर्बानी से वह ऊपर उठ सका है। मैंने उसके बारे में गलत सोचा। बेचारा काम की जल्दी में वह मुझे छोड़कर चला गया होगा और भूल किया होगा। मेरा धन भी ये रंग ख़रीदने के लिए शायद उसने इस्तेमाल किया होगा। मुझे देख वह प्रसन्न होगा और मेरी सहायता के बदले वह मेरे दस गुने मदद देगा।"

यह सोचकर भीड़ को चीरते हुए अबू सीर आगे बढ़ा। दर्वाज़ा ढकेलकर उसने भीतर झाँका। अबू कीर एक ऊँचे आसन पर तकियों के सहारे बैठा हुआ था। वह राजसी पोशाक पहने हुए था। उसके पीछे चार काले गुलाम और चार गोरे गुलाम सुंदर वस्त्र पहने खड़े हुए थे। दो आदमी नांदों के पास रंग मिलाने

का काम कर रहे थे। अबू कीर उन्हें आदेश दे रहा था कि उन्हें क्या क्या काम कैसे करना है!

अबू सीर भीतर जाकर अपने दोस्त के सामने खड़ा हो गया। उसने सोचा कि जब उसका मित्र उसकी ओर देखेगा, तब वह उसके कुशल समाचार पूछेगा। उसने यह भी सोचा कि उसका दोस्त उसे देखते ही दौड़ आयगा और उसे गले लगायेगा।

लेकिन अबू कीर अबू सीर को देखते ही झठ उठ बैठा और चिल्ला उठा–"अरे बदमाश! मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया था कि मेरी दूकान के पास न आओ। मेरा सर्वनाश करके क्या तुम मुझे बदनाम करने आये हो? अरे वहाँ पर कोई है? इसे पकड़ लो।"

अबू कीर के मुँह से ये बातें निकलते ही काले और गोरे गुलाम अबू सीर की ओर भूखे भेड़ियों की भाँति झपट पड़े और उसे नीचे गिराकर उस पर चढ़ बैठे। अबू कीर ने अपने हाथ में एक लाठी लेकर कहा–"इसे औंधे मुँह लिटा दो।" इसके बाद उसने अबू सीर की पीठ पर सौ बार लाठी से मारा, तब चित लिठाकर फिर सौ बार मारा, तब कहा–"अरे कमबख़्त! फिर से तुम ने मुझे अपना चेहरा दिखाया तो तुम्हें राजा के पास भिजवा कर तुम्हारी चमड़ी उधेड़वा दूँगा। तुम्हारा चेहरा देखने से भी पाप लगता है!"

इस तरह अबू सीर मार खाकर रोते-चिल्लाते, पैर घसीटते हुए बाहर चला गया। बाहर खड़े लोगों ने उसे दिल खोलकर गालियाँ सुनायीं।

अबू सीर अपने कमरे में लौट आया। चटाई पर लेटकर रात भर अबू कीर के बुरे व्यवहार के बारे में सोचता रहा। दूसरे दिन सवेरे तक उसकी पीड़ा जाती रही। वह उठकर हमाम के लिए चल पड़ा।

वह गली में आया और रास्ते चलने वाले से पूछा–"हमाम के लिए किधर जाना है?"

"हमाम के माने क्या चीज़ है?" उस आदमी ने अबू सीर से पूछा।

"नहाकर शरीर के मैल को धोने की जगह। इस दुनिया में इस से बढ़िया जगह और कहाँ हो सकती है?" अबू सीर ने कहा।

"जाकर समुद्र में नहाओ। सभी लोग वहीं नहाते हैं।" उस आदमी ने जवाब दिया।

अबू सीर ने समझ लिया कि इस शहर के लोग हमाम के सुख का ज्ञान नहीं रखते।

अबू सीर सीधे राजमहल में गया, राजा के दर्शन करके बोला—"महाराज, मैं परदेशी हूँ। पेशे से मैं नाई हूँ। लेकिन मैं अन्य हुनर भी जानता हूँ। मैं पानी गरम कर सकता हूँ। मालिश भी कर सकता हूँ। आज मैं हमाम में जाना चाहता था, पूछने पर कोई बता नहीं पाया। यहाँ के लोग यह भी नहीं जानते कि हमाम क्या है? ऐसे बड़े शहर के लिए हमाम का न होना अचरज की बात है। हमाम तो भूलोक का स्वर्ग होता है?"

"तुम जो हमाम की बात कहते हो, वह हमाम कैसे होता है? मैंने तो कभी उसका नाम तक नहीं सुना है।" राजा ने कहा।

अबू सीर ने विस्तार पूर्वक समझाया कि हमाम का निर्माण कैसे होता है और उसमें क्या क्या सुविधाएँ होती हैं। अंत में कहा—"महाराज, ये सब बातें अनुभव करने की हैं, वर्णन करके समझाने से
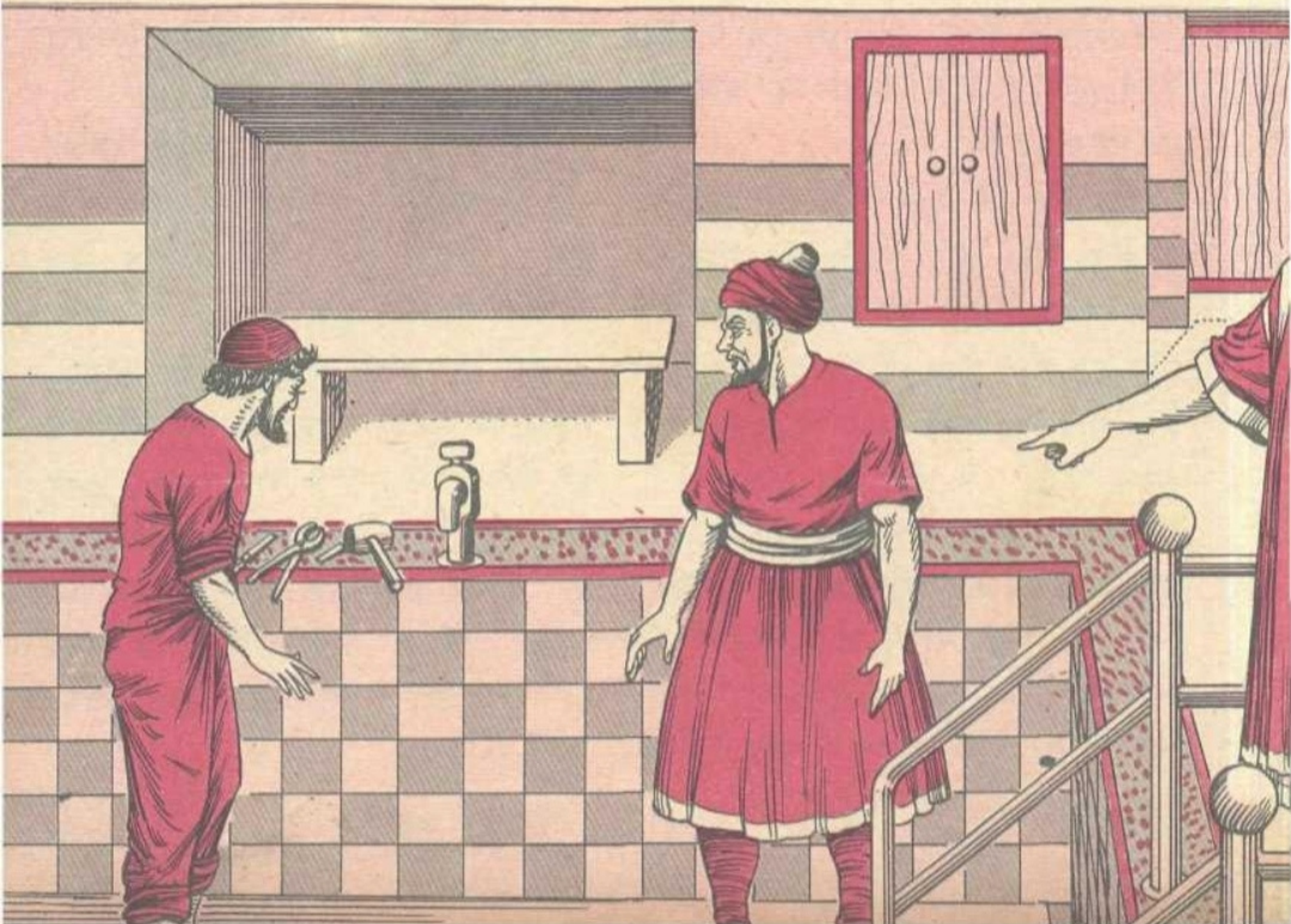
समझने की नहीं होती। हमाम होता तो इस शहर में रौनक़ आ जाता।"

ये बातें सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। "वाह! तुम तो बड़े ही भाग्यशाली हो! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ!" ये शब्द कहते राजा ने अपने हाथों से शाल ओढ़ाकर अबू सीर का सम्मान किया और कहा-"तुम जैसा कहोगे, वैसे करायेंगे। तुम जल्दी हमाम का निर्माण करा दो, मैं उसका अनुभव करना चाहता हूँ।"

इसके बाद राजा ने अबू सीर को दो नीग्रो, दो युवक, चार युवतियाँ, एक घोड़ा तथा एक सुंदर महल दिलाया। रंगरेज से बढ़कर अबू सीर को अधिक सुविधाएँ प्राप्त हुई। अबू सीर जहाँ पर निर्णय करेगा, वहाँ पर हमाम बनाने के लिए राज वगैरह नियुक्त किये गये। उन्हें साथ लेकर अबू सीर ने सारा शहर घूम कर एक प्रदेश को चुन लिया। वहाँ पर उसके पर्यवेक्षण में ऐसे एक अद्भुत हमाम का निर्माण कराया गया जो संसार में अपने ढंग का वही अकेला था। हमाम में सर्वत्र नक्काशी की गयी, रंग-बिरंगे संगमरमर के पत्थर बिठाये गये।

हमाम के बनते ही अबू सीर ने राजा के पास जाकर कहा-"महाराज, हमाम बनकर तैयार है। अब सिर्फ़ अन्य चीज़ों का प्रबंध बाक़ी है।"

इसके बाद अबू सीर ने हमाम का उद्घाटन करने के लिए एक मुहूर्त निर्णय किया और राजा को उसकी सूचना दी।

उस दिन हमाम में सर्वत्र सुगंधित द्रव्य छिड़कवा दिये, गुग्गुल लगाया, पानी गरम कराकर हौदों में भरवा दिया और नल खोलकर स्नान के लिए सारी तैयारी कर दी। हमाम धुले हुए मोतियों जैसे चमक रहा था। राजा जब अपने मंत्री तथा परिवार के साथ हमाम में आया तो उस अद्भुत प्रबंध को देख चकित रह गया। खुशबू, पानी की आवाज़ आदि ने उसे मुग्ध बनाया।
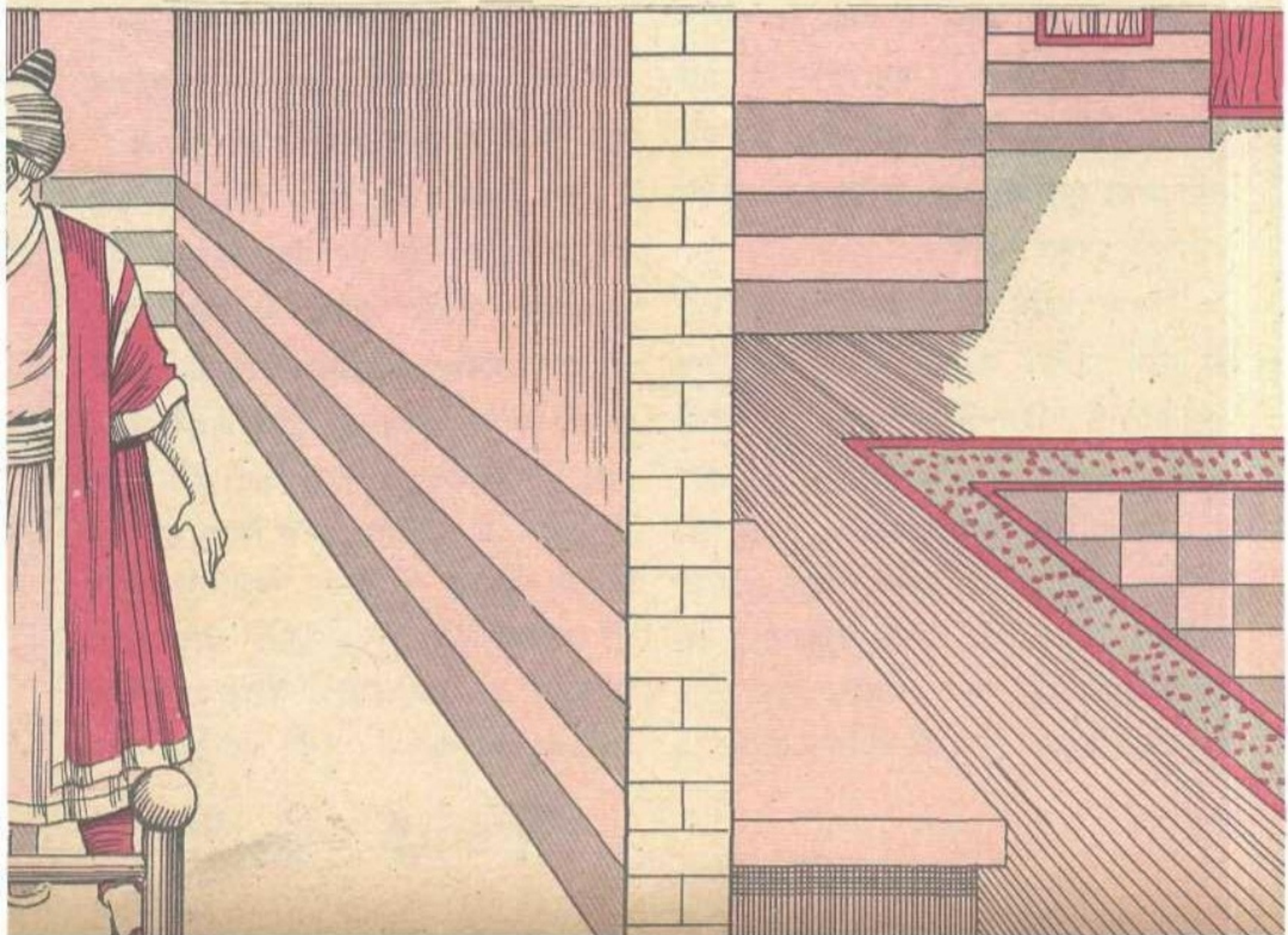
राजा ने इस काम के लिए दस हज़ार दीनार मंजूर किये। अबू सीर ने उस धन से तौलिये, रेशमी वस्त्र, इत्र, जवादी, तथा अन्य सुगंधित द्रव्य खरीद कर उचित स्थान पर रखवा दिये।

ये सारे प्रबंध करके अबू सीर ने राजा के पास जाकर मालिश करने के लिए दस बलिष्ठ व्यक्तियों को माँगा। राजा ने बीस पहलवानों को सौंप दिया। अबू सीर ने उन्हें मालिश करने व स्नान कराने का तरीक़ा सिखाया। उसने पहले उनका मालिश किया और उन्हें नहलाया, तब उनसे उसने वही काम लिया। इस तरह उनका प्रशिक्षण शीघ्र ही समाप्त हो गया।

"यह सब क्या है?" राजा ने पूछा।

"महाराज, यही हमाम है। लेकिन आप तो अभी प्रवेश-द्वार पर ही खड़े हैं।" ये शब्द कहते अबू सीर राजा को एक कमरे में ले गया। एक आसन पर चढ़वाकर उसके कपड़े उतरवा दिये, तौलिया पहनाया। उसके पैरों में लकड़ी के बने चप्पल पहना कर दूसरे कमरे में ले गया। वहाँ पर इस तरह किया कि राजा के शरीर से पसीना छूटने लगा, तब उन बलिष्ठ युवकों के द्वारा राजा के शरीर की मालिश करवायी। इसके बाद राजा के शरीर को धुलवाया। गरम पानीवाले कुण्ड के इत्र-जल में थोड़ी देर तक रखा,

कुछ समय बाद राजा के शरीर पर इत्र, जवादी तथा अन्य सुगंधित द्रव्यों का लेपन कराया। पैर व हाथों के नाखूनों पर रंग लगवाया, सारे शरीर पर धूप लगवाया।

स्नान समाप्त होने पर राजा को लगा कि उसका शरीर हवा में उड़ता जा रहा है। उसका शरीर एक दम चिकना था। उसे लगा कि मानों एक हाथी की ताक़त आ गयी हो।

"या अल्लाह! ऐसा अनुभव मैंने कभी नहीं किया, हमाम के माने यह है!" राजा के मुँह से ये शब्द निकले।

"जी हाँ, महाराज!" अबू सीर ने कहा।

मेरा शहर आज सचमुच राजा का शहर कहलाता है!" राजा ने कहा।

अबू सीर ने राजा के लिए शरबत मंगवायी। कस्तूरी की गंध देनेवाले तौलियों से उसके शरीर को पोंछवाया।

"इस स्नान का मूल्य कितना? तुम मुझसे कितना माँगना चाहते हो?" राजा ने पूछा।

"आपकी मेहर्बानी!" अबू सीर ने कहा।

"तब तो इस स्नान का दाम एक हज़ार दीनार बताऊँगा। इससे कम ठीक नहीं है।" राजा ने कहा। इसके बाद वह अबू सीर के हाथ में एक हज़ार दीनार रखते हुये बोला–"इससे कम दाम पर तुम किसी का भी स्नान मत कराओ।"

"माफ़ कीजिये, महाराज! अमीर होते हैं और गरीब भी। अगर हम यह नियम बना दे कि हर एक को एक हज़ार दीनार देना है तो जल्द ही इस हमाम को बन्द करना पड़ेगा।" अबू सीर ने समझाया।

"तब तो तुम कितना दाम निशिचत करना चाहते हो?" राजा ने पूछा।

"लोग अपनी अपनी हैसियत के मुताबिक़ मूल्य चुकायेंगे। गरीब आदमी कम

देगा, हज़ार दीनार तो राजा-महाराजा ही दे सकते हैं।" अबू सीर ने कहा।

अबू सीर के कथन पर सब लोग खुश हुये और उन सबने राजा से कहा–"अबू सीर का कहना उचित ही है। सब के पास इतनी सारी संपत्ति कहाँ होगी?"

"यह सब सही हो सकता है। मगर यह तो कहीं दूर देश से आया हुआ मुसाफ़िर है। इसे अमीर बनाना हमारा कर्तव्य है। हमारे नगर को एक सुंदर हमाम तैयार करके दिया है। तुम सब एक स्नान के लिए अगर एक एक हज़ार दीनार न दे सको तो, इस बार एक सौ दीनार और एक-दो गुलाम दे दो। इसके बाद अबूसीर की इच्छा के मुताबिक़ तुम लोग अपनी अपनी हैसियत के अनुसार दो।" राजा ने कहा।

राजा के साथ चालीस लोग आये थे, उन सबको अबूसीर ने स्नान करवा कर चार हज़ार दीनार, चालीस काले व गोरे गुलाम, चालीस नीग्रो गुलाम और चालीस औरतों को भी पाया। राजा ने विशेष रूप से दस हज़ार दीनार, दस गोरे गुलाम व नीग्रो तथा दस औरतों को पुरस्कार में दिया।

अबू सीर ने राजा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए पूछा–"महाराज, मैं इन गुलामों और औरतों को कहाँ पर रखूँ?"

"तुम्हें अमीर बनाने के लिए मैंने इन परिचारिकाओं को दिया है। जब तुम अपने देश को लौटोगे तब ये लोग तुम्हारी सेवा करेंगे। ये लोग तुम्हारी संपत्ति हैं।" राजा ने कहा। पर अबू सीर ने उनका भार वहन करने में असमर्थता प्रकट की।

इस पर राजा ठठाकर हंस पड़ा और बोला–"यह बात सच है।" इसके बाद राजा ने एक एक गुलाम का सौ रुपये मूल्य चुकाकर सबको ख़रीद लिया। खजांची ने उसी वक्त मूल्य चुकाया।

राजा के चले जाने पर अबूसीर सारा धन अपने निवास में ले गया, और थैलियों में भरवा कर सुरक्षित रखा। (और है)

कुलदेवी

चीन में चांग नामक एक युवक था। वह बहुत ही गरीब था। अपने माता-पिता को बचपन में ही खो चुका था। संपत्ति के नाम पर उसके पास सिर्फ़ एक झोंपड़ी थी। वह छोटा-मोटा काम करके अपना पेट पालता था।

चांग के घर के समीप में एक व्यापारी था। व्यापारी ने सोचा कि उस अनाथ चांग को अपने घर नौकर रख कर रूखी-सूखी रोटी दी जाय और उसकी बची-खुची झोंपड़ी को हड़प लिया जाय। लेकिन चांग व्यापारी के स्वभाव से भली भांति परिचित था, इसलिए उसने उस व्यापारी के घर काम करने से साफ़ इनकार किया।

चांग की कुलदेवी "टोंगो" थी। वह चीन वासियों की न्याय की देवी कहलाती थी। रोज़ काम पर जाने के पहले चांग 'टोंगो' की मूर्ति के सामने झुककर प्रणाम करता, तब काम पर चला जाता।

धीरे धीरे चांग ने काफ़ी धन इकट्ठा किया। चांग अब लड़का नहीं था, बल्कि युवक बन गया था, मगर वह हमेशा प्रसन्न रहता था। इससे व्यापारी की ईर्ष्या भड़क उठी। उसने चांग की प्रसन्नता का कारण जानना चाहा। एक दिन रात को व्यापारी ने चांग के घर जाकर खिड़की में से भीतर झांका, उसके आश्चर्य की न सीमा रही।

चांग के बाजू में एक बड़ी पेटी थी। चांग उस पेटी को खोल कर सोने के सिक्के एक-एक करके गिन कर उसमें डाल रहा था। इसके बाद उसने अपनी जेब में से थोड़े से छुट्टे पैसे निकाले और उन्हें भी पेटी में डाल दिया। तब उसने पेटी को ज़मीन में रखा, उस पर एक

विमलेश माथुर

लकड़ी का तख़्ता बिछाया। तख़्ते पर 'टोंगो' की मूर्ति रख दी, मूर्ति के सामने पूजा के सामान रखकर पास में ही विस्तर लगाकर लेट गया।

व्यापारी उस दृश्य को देखकर चकित हुआ और चुपचाप घर लौटा। उस रात को उसे नींद नहीं आयी। उसने मन में सोचा–"इस कमबख़्त ने कितना सोना इकट्ठा किया है! इसे हड़प लेना चाहिये।"

दूसरे दिन जब चांग काम पर चला गया, तब व्यापारी ने उस घर में घुस कर टोंगो की मूर्ति को हटाया, तख़्ता उठाकर पेटी खोल दी। उसमें से सोना निकालकर अपनी थैली में डाल दिया। फिर पेटी बंद करके ऊपर तख़्ता लगाया। उस पर टोंगो की मूर्ति रखकर अपने घर चला आया।

उस दिन की रात को चांग ने घर लौट कर देखा तो सोना गायब था। चांग को बड़ा दुख हुआ। ख़ूब सोच-विचारने पर उसे लगा कि उसके घर में चोरी करनेवाला व्यक्ति वही हो सकता है जो उसके जान-पहचान का ही होगा।

सवेरा होते ही चांग ने न्यायाधीश के पास जाकर सारा समाचार सुनाया और उससे निवेदन किया कि उसे उसका सोना वापस दिला दे।

न्यायाधीश ने चांग को आश्वासन देकर घर भेज दिया। उसने तब ख़ूब सोचा और विचारा तो उसे भी व्यापारी पर संदेह हुआ। चोर को पकड़ने की जिम्मेदारी उसी की थी, इसलिए उसने रात के समय गुप्त रूप से चांग के घर पर पहरा देने के लिए एक आदमी को नियुक्त किया।

दो दिन तक चांग के घर की तरफ़ कोई न फटका। लेकिन तीसरे दिन की रात को व्यापारी चांग के घर के समीप जाकर खिड़की में से झाँक रहा था। पहरेदार ने उसे देख लिया। पहरेदार के यह समाचार देने पर न्यायाधीश का संदेह और दृढ़ हो गया।

अब व्यापारी को सिर्फ़ चोरी करते रंगे हाथ पकड़ना बाक़ी रह गया था। इसके लिए न्यायाधीश ने एक उपाय सोचा और चांग को भी बताया।

चौथे दिन की रात को व्यापारी ने जब चांग के घर में खिड़की में से झाँकक़र देखा तो उसे एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया।

झोंपड़ी के अन्दर खिड़की की ओर पीठ किये एक औरत खड़ी थी। उसके सामने घुटनों पर बैठे चांग प्रणाम कर रहा था। वह स्त्री चांग से कह रही थी–"बेटा, मैं तुम्हारी भक्ति पर प्रसन्न हूँ। तुम्हारे घर के लोग कई पीढ़ियों से मेरी पूजा करते आ रहे हैं। तुम्हारे साथ बहुत बड़ा अन्याय हो गया है। इसे मैं सहन नहीं कर सकती। मैं जानती हूँ कि किसने तुम्हारा सोना चुराया है! उसने जो एक हमारे सोने के सिक्के चुराये हैं, वे सब तुम्हें वापस दिलाऊँगी।"

उस स्त्री की बातें सुननेवाला व्यापारी आश्चर्य में आकर बोला–"एक हज़ार सिक्के नहीं, सौ ही तो हैं। मैंने अच्छी तरह से गिन लिया है।" ज़ोर से ये शब्द कहते व्यापारी अपने घर की ओर दौड़ा। भीतर पहुँचकर सोने के सिक्कों की गिनती करने लगा।

उसी समय न्यायाधीश ने दस सिपाहियों के साथ प्रवेश करके व्यापारी को बन्दी बनाया। उसे तीन महीने की सजा देकर चांग को उसका सोना वापस दिलाया।

इस घटना के द्वारा न्यायाधीश की प्रतिष्ठा बढ़ गयी। चीन में यह विश्वास था कि 'टोंगो' देवी न्यायाधीशों के सामने प्रत्यक्ष होकर उनकी सहायता करती है। मगर ऐसे न्यायाधीश को किसीने देखा नहीं है। परंतु यह विश्वास जनता में फैल गया कि इस न्यायाधीश की टोंगो देवी ने सहायता दी है। इसलिए उसके जमाने में अन्याय बिलकुल घट गये थे।
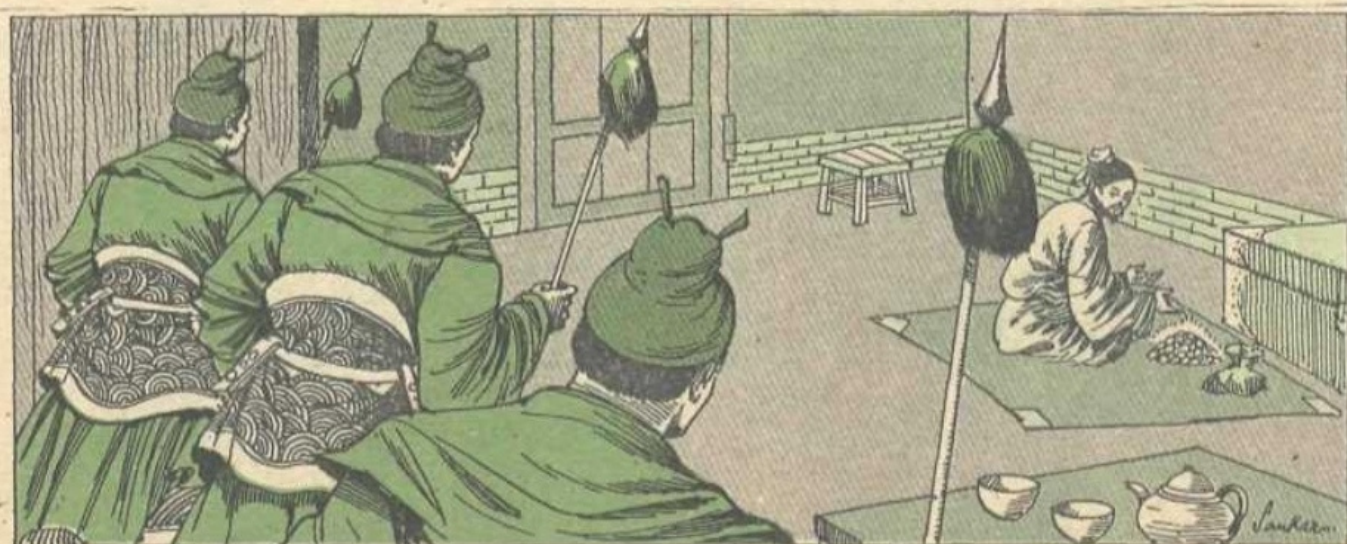
जैसा पेशा, वैसा वेष!

एक शहर में एक भिखमंगा था। वह सारे शहर में घूमते भीख माँगता और अपना पेट भरता।

एक दिन उस भिखारी की हालत पर एक दयालु व्यक्ति ने रहम खाकर उसकी हजामत करायी, नहला कर धुले हुए अच्छे कपड़े पहनने के लिए दिये, भर पेट खाना खिलाकर भेज दिया।

भिखारी का वह दिन आराम से बीता।

दूसरे दिन धुले हुए कपड़े पहने भिखारी भीख माँगने निकला। सब ने एड़ी से चोटी तक उसकी ओर देख डाँट बतायी–"अबे, तू खूब बन-ठनकर भीख माँगते हो? शर्म नहीं आती। तू क्या लंगड़ा है या लूला है? मजूरी करके अपना पेट क्यों नहीं पालता?" उस दिन किसी ने उसे भीख नहीं दी।

भिखारी ने अपनी भूल मालूम कर ली। दूसरे दिन वह धुले हुए कपड़े छोड़ वे ही फटे-पुराने कपड़े पहन लिये। दाढ़ी बढ़ाकर फिर भीख माँगने चल पड़ा। उसे बड़ी आसानी से भीख मिल गयी।

असंतोष

प्राचीनकाल में विन्ध्याचल के प्रदेश में गंधर्व निवास करते थे। उन दिनों में कंदर्प नामक छोटे राज्य पर कुवलय नाम का राजा शासन करता था।

राजा कुवलय एक दिन शिकार खेलने जंगल में चला गया तो उसने एक टीले पर एक अनुपम सुंदरी को देखा और उस पर मोहित हो उठा। उसने हाथ हिलाकर उस सुंदरी को टीले से उतर आने का संकेत किया। मगर वह सुंदरी अस्वीकृति सूचक हाथ हिलाकर टीले से उतरकर चली गयी। कुवलय ने जल्दी जल्दी टीले पर चढ़कर चारों ओर देखा, मगर कहीं उसका पता न लगा।

कुवलय के मन में यह इच्छा पैदा हुई कि किसी तरह उसे मनवाकर उसके साथ विवाह करना चाहिए। इस संकल्प को लेकर वह दूसरे दिन भी उस टीले के पास पहुँचा। वह सुंदरी उस दिन भी दिखाई दी, मगर ज्यों ही कुवलय उसके निकट पहुँचा त्यों ही वह कहीं भाग चली गयी।

राजा कुवलय ने अब यह निर्णय कर लिया कि वह सुंदरी जो भी शर्तें रखें, उन्हें स्वीकार करके उसके साथ विवाह करना चाहिए। क्योंकि वह मानवी नहीं, बल्कि गंधर्व स्त्री होगी, यह सोचकर वह तीसरे दिन भी टीले के पास गया। उस दिन भी टीले के पास वह दिखाई दी। राजा जब उसके निकट गया, तब वह भागी नहीं, बल्कि उसके निकट आकर बोली–"मेरा नाम मलयवती है। तुम कौन हो और रोज़ मेरे पीछे क्यों पड़ते हो?"

"तुम्हारे साथ विवाह किये बिना मेरा जन्म निरर्थक मालूम होता है। इसलिए

रविशंकर शर्मा

तुम मेरे साथ घर लौटकर मेरी पत्नी बनकर रहो। मैं तुम्हारे सुख का सारा प्रबंध करूँगा।" राजा कुवलय ने कहा।

मलयवती ने मान लिया।

राजा कुवलय मलयवती को घर लाया। उसके साथ विवाह करके गृहस्थी चलाने लगा। मलयवती के आने के बाद उसकी पशु-संपदा दुगुनी हो गयी। ज़मीन दुगुनी फ़सल देने लगी। इससे राजा कुवलय बहुत प्रसन्न हुआ। उसके पास आकर याचक जो माँगता, वही देता। उसके दानों से लोग संतुष्ट न हुए, बल्कि वे यही कहते थे–"ये दान उनके लिए हिसाब रखने के नहीं, इससे सौ गुने उन्हें मिल ही जाते हैं। क्योंकि उन्होंने देवी के साथ जो विवाह किया है!"

इस तरह कुछ साल बीत गये। कुवलय के मन में ज़िंदगी के प्रति घृणा और असंतुष्टि पैदा होने लगी। इस वक़्त वह महान धनी है। आस पास के राजा उससे ईर्ष्या करते हैं। अब यह पुरानी कहानी हो गयी थी। मलयवती उस समय भी सुंदर थी, लेकिन वह देवी नहीं, मानवी थी।

यह सोचते कुवलय खेतों से होकर पैदल चल रहा था, तभी उसे एक रथ की गड़गड़ाहट सुनायी दी। उसने सर उठाकर देखा, थोड़ी दूर पर रथ में बैठे जानेवाली एक अनुपम सौंदर्यवती दिखाई पड़ी।

उस नारी को देखते ही कुवलय को लगा–"ओह! मलयवती के साथ विवाह न करके इस युवती के साथ करता तो क्या ही अच्छा होता!"

कुवलय ने तालियाँ बजायीं, पर उस युवती ने सर घुमाकर उसकी ओर न देखा। फिर भी वह रथ के पीछे दौड़ने लगा। पहाड़ी रास्ता ऊबड़-खाबड़ था, लेकिन उसकी परवाह किये बिना कुवलय रथ का पीछा करने लगा।

बहुत दूर जाकर रथ रुक गया। रथ से वह सुंदरी उतर पड़ी। कुवलय उसे देख

चकित रह गया। वह कोई और न थी, बल्कि मलयवती थी।

"मलयवती! तुम्हीं हो! मैं यह जानने के लिए रथ के पीछे दौड़ पड़ा कि रथ में तुम ही हो या और कोई? कहाँ जाती हो! चलो घर!" कुवलय ने कहा।

दोनों घर लौट आये।

उस दिन से कुवलय के मन में असंतोष बढ़ता गया। एक दिन उसने घर लौटकर देखा, मलयवती घर में न थी। नौकरों ने बताया कि वह अपने घर चली गयी है।

उसके जाने के बाद खेतों में फ़सल कम होने लगी! पशुओं की संख्या घटती गयी।

कुवलय ने सोचा–"मेरे अच्छे दिन तो लद गये। कोई भूत मेरे पीछे पड़ा हुआ है।" उस भूत के दिखाई देने पर उसका खात्मा करने का भी निश्चय कर लिया।

कुवलय उस भूत के वास्ते रात-दिन ढूंढ़ता रहा। एक दिन वह उसकी आँखों में पड़ा भी। उसका पीछा किया। पकड़कर नीचे गिराया और उसके ऊपर बैठकर छुरी से मारने के लिए छुरी को ऊपर उठाया।

उसी वक़्त बादलों की ओट में से चाँद निकल आया। चाँदनी में कुवलय भूत का चेहरा देख विस्मय में आ गया। उस भूत का चेहरा उसी का था।

कुवलय ने छुरी दूर फेंक दी। भूत को वहीं छोड़ अपने घर लौट आया।

मलयवती ने दर्वाज़ा खोला। कुवलय ने प्रसन्न हो पूछा–"मलयवती, तुम लौट आयी?"

"जी हाँ! तुमने अपने भीतर के असंतोष को भगा दिया। अब हम सुख के साथ दिन बिता सकते हैं।" मलयवती ने उत्तर दिया।

उसकी बात सच निकली। इसके बाद कुवलय के मन में असंतोष जाता रहा। वह मलयवती के साथ सुखपूर्वक दिन बिताने लगा।

दवा का रहस्य

एक गाँव में एक वैद्य था। वह गरीबों का मुफ़्त में इलाज करता और अमीरों से खूब धन वसूल करता था।

उस गाँव में एक अमीर था। एक बार वह विष ज्वर का शिकार हो गया। वैद्य ने जाँच करके बताया कि शीघ्र इलाज न किया जाय तो जान का ख़तरा है।

"दवा का कितना ख़र्च बैठेगा?" अमीर ने पूछा।

"दवा तो इस वक्त मेरे पास तैयार नहीं है। कुछ चीज़ें ख़रीदकर दवा तैयार करनी है। उन्हें ख़रीदने के लिए दस रुपये चाहिए।" वैद्य ने कहा।

अमीर ने सोचा कि वैद्य दवा की चीज़ों का दाम ज़्यादा बता रहा है, इसलिए उसने पूछा–"वैद्यजी, उन चीज़ों की फ़ेहरिस्त दीजिये। मैं मँगवा दूँगा।"

वैद्य ने फ़ेहरिस्त दी। लेकिन वे चीज़ें गाँव में नहीं मिलीं। एक आदमी को शहर भेजकर वे चीज़ें मँगवायीं। उन चीज़ों को ख़रीदने के लिए पंद्रह रुपये ख़र्च हुए और उस आदमी का ख़र्च पंद्रह रुपये बैठा।

दवा की चीज़ें मिलते ही वैद्य ने दवा तैयार करके अमीर के पास भेजा। उसके सेवन से उसकी बीमारी जाती रही। मगर दस रुपये ख़र्च करने की जगह अमीर ने तीस रुपये ख़र्च किये।

कंगण

पाँच-छे सौ साल पहले विजयनगर राज्य पर राजा हरिहर राय शासन करता था। उसके मंत्री का नाम भास्कर था। भास्कर बड़ा मेधावी था। राजा ने उसकी प्रतिभा पर मुग्ध हो भास्कर के हाथों में मरकत के कंगण पहनाये।

मंत्री भास्कर रोज़ सवेरे अपने नौकरों को साथ लेकर तुंगभद्रा नदी में जाता, स्नान और संध्या-वंदन करके लौट आता था। एक दिन सवेरे मंत्री भास्कर नदी में स्नान कर रहा था, तभी उसके हाथ का एक कंगण फिसलकर पानी में गिर गया। नौकरों ने उसके हाथों में एक ही कंगण देख पूछा–"सरकार, दूसरे हाथ का कंगण कहाँ?"

"पानी में फिसलकर गिर गया।" मंत्री भास्कर ने जवाब दिया। "आप बताइये, वह कंगण कहाँ गिर गया है? हम लोग ढूंढ़कर ला देंगे।" नौकरों ने कहा।

मंत्री भास्कर ने झट अपने दूसरे हाथ का कंगण निकाला, उसे नदी में फेंकते हुए कहा–"यह कंगण जहाँ गिरा है, पहला कंगण भी वहीं गिरा होगा।" ये शब्द कहकर वह घर की ओर चल पड़ा।

नौकरों ने नदी में कूदकर बड़ी खोज की, पर एक भी कंगण नहीं मिला।

धीरे धीरे यह समाचार राजा के गुप्तचरों को मालूम हुआ। उन लोगों ने राजा से शिकायत की–"महाराज, आप मंत्री का जैसा आदर करते हैं, उसमें सौवाँ हिस्सा भी मंत्री के मन में आपके प्रति नहीं है।" इन शब्दों के साथ कंगणों का वृत्तांत भी सुनाया। राजा ने तुरंत अपने नौकरों के द्वारा मंत्री भास्कर को बुला भेजा। मंत्री के हाथों में कंगण न थे।

इसे देख राजा ने मंत्री से पूछा– "मंत्रीजी, हम ने तुम्हें जो मरकत के कंगण

विमला वाधे

पुरस्कार में दिये, उन्हें कम से कम हमारे पास आते वक़्त पहन लेते ?"

इस पर मंत्री ने जवाब दिया–" महाराज, आप ने जो कंगण मुझे पुरस्कार में दिये, उन्हें मैंने स्वयं नहीं निकाला। मैं स्नान करने के लिए तुंगभद्रा नदी में गया। मेरी माता गंगाभवानी ने मेरे एक हाथ का कंगण लिया, मुझे उसके एक हाथ में कंगण पहनना अच्छा न लगा। मुझे दुख भी हुआ। इसलिए मैं अपने दूसरे हाथ का कंगण भी उसे समर्पित कर आया हूँ।"

यह बात सुनने पर राजा को बड़ा क्रोध आया। मगर अपने क्रोध पर क़ाबू रखते हुए राजा बोला–" तुमने जो कंगण गंगाभवानी को समर्पित किये, उन्हें मैं उनके हाथों में देखने का कुतूहल रखता हूँ। क्या तुम उनके वे हाथ दिखा सकते हो ?" राजा ने ये शब्द व्यंग्यपूर्वक कहे।

" कल प्रातःकाल जब मैं स्नान के लिए तुंगभद्रा में जाऊँगा, तब कृपया आप वहाँ पधारे।" मंत्री ने कहा।

दूसरे दिन राजा सपरिवार तुंगभद्रा की ओर चल पड़ा।

मंत्री भास्कर ने स्नान समाप्त किया। गंगास्तव करके निवेदन किया–" गंगा माईजी! कंगण धारण किये आपके हाथ इन सब को दिखाकर इन्हें संतोष प्रदान कीजिये।"

तुरंत नदी में से दो हाथ ऊपर उठे। उन हाथों में मरकतों के कंगण थे। कुछ क्षणों बाद वे हाथ फिर पानी में चले गये।

इस दृश्य को देख राजा शर्म से दब गया। मंत्री भास्कर से विदा लेकर राजमहल को लौटा। कुछ समय बाद मंत्री को बुलाकर उससे राजा ने क्षमा माँग ली।

" महाराज! आप मेरे जैसे अनेक लोगों की रक्षा करते हैं। आप मुझ से क्षमा माँगे, यह तो मेरे प्रति अन्याय है। आप का अनुग्रह मुझ पर हो, यही मेरे लिए पर्याप्त है।" मंत्री भास्कर ने विनयपूर्ण शब्दों में निवेदन किया।

पांडवों के वनवास का बारहवाँ वर्ष पूरा होने को है। इन्द्र ने पांडवों की सहायता करने के हेतु यह निश्चय किया कि कर्ण के पास जाकर उसके कवच और कुण्डल की याचना करे। यह समाचार कर्ण के पिता सूर्य को मालूम हुआ। सूर्य ने एक दिन प्रात:काल स्वप्न में कर्ण को दर्शन देकर कहा–"हे कर्ण! तुम्हारे पास ब्राह्मण आकर जो भी याचना करते हैं, उसे तुम दे देते हो। इसलिए इन्द्र ब्राह्मण के रूप में आकर तुम्हारे कवच और कुण्डल मांगनेवाला है। उसे चाहे तुम जो भी चीज़ दान करो, मगर कवच और कुण्डल मत दो। जब तक कवच-कुण्डल तुम्हारे शरीर पर होंगे, तब तक कोई तुम्हें मार नहीं सकता। वे चीज़ें दान दीं तो तुम्हारी मौत आसानी से हो सकती है।"

"भगवन, तुमने स्वयं दर्शन देकर मुझे हित की बातें बतायीं। मगर मेरा यह व्रत है कि ब्राह्मण आकर जो भी चीज़ मांगे, वह दूं। इसी व्रत के कारण संसार में मेरा यश फैल गया है। ऐसी हालत में इन्द्र स्वयं मेरे पास आकर कवच-कुण्डल माँगे तो मैं दिये बिना कैसे रह सकता हूँ? मैं ज़रूर वे चीज़ें दान दूँगा जिस से मेरा यश और फैल जायगा। इससे पांडवों का अपयश होगा। यश को खोकर जीने से क्या फ़ायदा?" कर्ण ने कहा।

"पगले! शरीर के समाप्त होने पर यश को लेकर क्या करोगे? वह तो

शवालंकर जैसा है। अर्जुन के साथ तुम्हारा युद्ध होगा। जब तक तुम्हारे शरीर पर कवच-कुण्डल होंगे तब तक अर्जुन तुम्हें जीत नहीं सकता। इसलिए तुम वे चीज़ें इन्द्र को मत दो।" सूर्य ने समझाया।

"भगवन, मुझे क्षमा करे! मेरा यह नियम है कि ब्राह्मण आकर दान माँगे तो मैं अपने प्राण तक दे दूँ! मैं कवच और कुण्डल की मदद के बिना ही अर्जुन को हरा सकता हूँ। मेरे पास परशुराम तथा द्रोण के दिये हुए अस्त्र हैं।" कर्ण ने सूर्य को समझाया।

"यदि तुम अपने व्रत पर अडिग रहना चाहते हो तो एक काम करो। इन्द्र के पास एक असाधारण शक्ति है। उसके द्वारा बलवान शत्रु का भी वध किया जा सकता है। वह शक्ति शत्रु को मारकर वापस लौट आयेगी। इन्द्र जब तुम्हारे कवच और कुण्डल माँगेगा, तब तुम उससे वह शक्ति माँग लो। उसकी सहायता से तुम अर्जुन को हरा सकते हो।" सूर्य ने कहा।

इतने में कर्ण नींद से जाग उठा। सवेरा होने को था। इसलिए वह इन्द्र के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। कर्ण प्रति दिन मध्याह्न के समय सूर्य की उपासना करके वहाँ पर उपस्थित ब्राह्मणों को वे सब दान देता था जो वे लोग माँगते थे। उस दिन इन्द्र ने ब्राह्मण के वेष में उपस्थित होकर भिक्षा माँगी।

कर्ण ने अपने नियम के अनुसार उसकी पूजा की और पूछा—"हे ब्राह्मण! तुम क्या चाहते हो? तुम्हें सुंदर स्त्रियाँ चाहिए? या उपजाऊ ज़मीन? या बढ़िया गायें? क्या चाहते हो? माँग लो।"

"बेटा! मुझे ये सब कुछ नहीं चाहिए। तुम्हारे सहज कवच और कुण्डल निकाल कर दो।" इन्द्र ने पूछा।

"हे ब्राह्मणोत्तम! ये कवच और कुण्डल मेरे प्राणों की रक्षा करनेवाले हैं। इन्हें छोड़ कोई और चीज़ माँग लो!" कर्ण ने जवाब दिया। मगर

कर्ण को मालूम हो गया कि यह ब्राह्मण इन्द्र ही है।

"नहीं, मुझे केवल कवच और कुण्डल ही चाहिए।" इन्द्र ने कहा।

इस पर कर्ण ने हँसकर कहा–"मैं जानता हूँ कि आप इन्द्र हैं। आप को चाहिए था कि हम जैसे लोगों को वर दे, लेकिन आप का याचक बनना मुझे अच्छा नहीं लगता। अगर मैं आपको कवच-कुण्डल दे दूँ तो मैं अपने शत्रु के हाथों में आसानी से पराजित होकर अपयश पा लूँगा। इसलिए मैं आपको कवच-कुण्डल तो दूँगा, मगर बदले में आप मुझे अपनी असाधारण शक्ति दे दीजिये।"

इन्द्र ने कहा–"ऐ कर्ण! मैं अपनी शक्ति तुम्हें दूँगा। मगर तुम इसका प्रयोग एक ही व्यक्ति को मारने के लिए इस्तेमाल कर सकते हो। तुम जब उसका प्रयोग करोगे तब वह तुम्हारे शत्रु को मारकर पुन: मेरे पास लौट आयेगी। यदि यह तुम्हें स्वीकार हो तो तुम मेरी शक्ति को ले सकते हो।"

"भगवन, मेरा तो एक ही शत्रु है। उसका वध करना ही मेरा निर्णय है।" कर्ण ने कहा।

"मैं जानता हूँ कि तुम इस शक्ति के द्वारा अर्जुन का वध करना चाहते हो। लेकिन जब तक कृष्ण उसकी सहायता करता रहेगा, तब तक तुम उसे मार नहीं सकते। फिर भी तुम इस शक्ति का तभी उपयोग करो जब तुम आफ़त में फँस जाओगे तथा तुम्हारे और अस्त्र काम न देते हो। मगर जल्दबाजी में आकर दुर्बल व्यक्तियों पर तुम इसका प्रयोग करोगे तो यह शक्ति तुम्हारे प्राण लेकर छोड़ेगी।" इस प्रकार इन्द्र ने सचेत किया।

इसके बाद कर्ण ने इन्द्र से पूछा कि उसके शरीर के साथ जन्म लेकर बढ़नेवाले कवच और कुण्डलों को शरीर से निकालने पर उसका रूप विकृत न हो जाय, ऐसा वरदान उसे दे। इन्द्र ने मान लिया।

तब कर्ण ने इन्द्र से वह शक्ति ग्रहण करके अपने शरीर से कवच-कुण्डल उतार कर इन्द्र को दे दिया।

कर्ण के कवच-कुण्डल उतारने की बात जान कर पांडव बहुत प्रसन्न हुये, लेकिन कौरवों को बड़ा दुख हुआ।
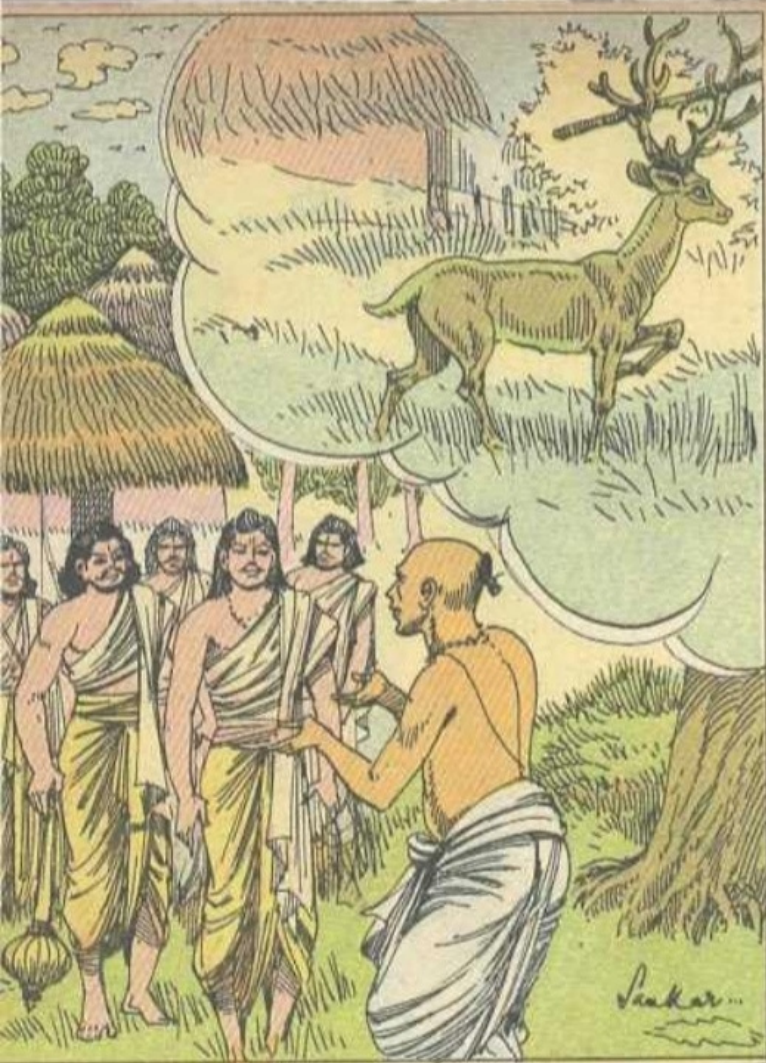
पांडव द्वैतवन में ही रह रहे थे। एक दिन एक ब्राह्मण उनके पास दौड़ आया और बोला–"मैंने आरणि को एक पेड़ की डाल पर लटकाया। इतने में एक हिरण आकर अपने शरीर को एक डाल से रगड़ने लगा तो वह आरणि उसके सींगों में फंस गया, तब वह हिरण मेरे आरणि के साथ भाग गया। उसके बिना मैं आग जला नहीं सकता। आप कृपया मेरा आरणि ला दीजिये।"

तुरंत पांडव उस हिरण के पीछे दौड़ पड़े और उस पर कई बाण चलाये। मगर आश्चर्य की बात थी कि एक भी बाण उस पर न लगा। वह हिरण भागता ही गया और आखिर एक घने जंगल में ओझल हो गया।

पांचों पांडव थक गये। भूख और प्यास से परेशान हो वे एक पेड़ के नीचे लुढ़क पड़े। उस वक़्त नकुल ने कहा–"हम लोग इस तरह कठिनाइयों में क्यों फँस गये हैं? इसका कारण क्या है?"

"पूर्व जन्म में कोई दुष्कृत्य करते हैं तो इस जन्म में मानवों को कष्ट झेलने पड़ते हैं।" युधिष्ठिर ने कहा।

"उस दिन द्रौपदी को जब भरी सभा में लाया गया, तब मैंने उन दुष्टों का वध नहीं किया। इसीलिए हम ये सब यातनाएँ झेल रहे हैं।" भीम ने कहा।

"जुआ खेलते समय कर्ण अंट-संट बक रहा था, फिर भी मैं उसकी बातों को कायर की भांति शांति के साथ सहन करता रहा। इसीलिए हम इस जंगल में यातनाएँ झेल रहे हैं।" अर्जुन ने कहा।

"उस दुष्ट शकुनि का तभी वध कर देते तो हमें ये तक़लीफें न होतीं।" सहदेव ने कहा।

तब युधिष्ठिर ने नकुल को देख कहा–"हम सब को प्यास लगी है। तुम पेड़ पर चढ़कर देख लो, कहीं पानी हो तो इस तरकस में भरकर लाओ।"

नकुल ने पेड़ पर चढ़कर देखा। उसे पता लगा कि पास में ही पानी है। वहाँ जाकर वह स्वयं प्यास बुझाकर बाक़ी सब को पानी लाने के लिए चल पड़ा। वह एक सरोवर के पास पहुँचकर पानी पीने ही जा रहा था तभी उसे एक अशरीरवाणी सुनाई दी–"ठहरो, तुम मेरे सवालों का जवाब देकर तब पानी पिओ। यह सरोवर मेरा है।"

नकुल उन बातों की परराह किये बिना ही पानी पीकर बेहोश हो गया। बड़ी देर तक भी उसके लौटते न देख युधिष्ठिर ने सहदेव को भेजा। सहदेव ने सरोवर के पास पहुँचकर देखा कि नकुल बेहोश हुआ है। उसके दिल में दुख उमड़ पड़ा, फिर भी प्यास बुझाने को हुआ। वह भी अशरीरवाणी की परवाह किये बिना पानी पीकर बेहोश हो गया।

इसके बाद उनका पता लगाने के लिए युधिष्ठिर ने अर्जुन को भेजा। अर्जुन ने सरोवर के पास जाकर अपने छोटे भाइयों को देखा। यह सोचकर कि उन्हें मारने वाला कहीं पास में होगा। चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाई, पर कोई न दिखाई दिया। प्यास बुझाने वह पानी पीने ही जा रहा था कि उसे भी अशरीरवाणी सुनाई दी।

"यदि तुम सामर्थ्य रखते हो तो मेरे सामने आ जाओ। छिपकर बात क्यों करते हो?" ये शब्द कहते अर्जुन उसी दिशा में आगे बढ़ा, जिस दिशा से आवाज़ आ रही थी। इसके बाद वह भी पानी पीकर बेहोश हो गया।

इसके बाद भीम वहाँ पर आया। वह भी अशरीरवाणी की परवाह किये बिना पानी पीकर बेहोश हो गया।

अंत में युधिष्ठिर स्वयं सरोवर के पास आया। वहाँ पर निर्जीव पड़े अपने भाइयों को देख बहुत दुखी हुआ। उस वक़्त

अशरीरवणी यों बोली–"मैं एक बक हूँ। इस सरोवर की मछलियों को खाकर अपने दिन क.टती हूँ। मेरे सवालों का जवाब दिये बिना पानी पीने के अपराध में तुम्हारे भाइयों को मैंने मार डाला है। तुम मेरे सवालों का जवाब देकर जितना चाहे उतना पानी ले लो। वरना तुम्हारी भी वही हालत होगी।"

ये बातें सुनकर युधिष्ठिर बोला–"मेरे भाई एक पक्षी के हाथों में मरनेवाले नहीं हैं। तुम बक नहीं हो? सच्ची बात बताओ कि तुम कौन हो और चाहते क्या हो?"

"हाँ, मैं बक नहीं हूँ। यक्षों का राजा हूँ।" ये शब्द कहते वह एक ताड़ वृक्ष के बराबर सरोवर के किनारे युधिष्ठिर को दिखाई दिया और बोला–"तुम पानी चाहते हो तो मेरे सवालों का सही जवाब दे दो।"

"पूछो, मुझ से बन पड़ेगा तो मैं जवाब देता हूँ।" युधिष्ठिर ने उत्तर दिया।

यक्ष युधिष्ठिर के जवाबों से तृप्त हुआ। तब उसने कहा–"मैं तुम्हारे जवाबों से खुश हुआ। मैं तुम्हारे भाइयों में से एक को जिला सकता हूँ। बताओ, किसको जिलाऊँ?"

"यक्षराज! तब तो नकुल को जिलाओ।" युधिष्ठिर ने कहा।
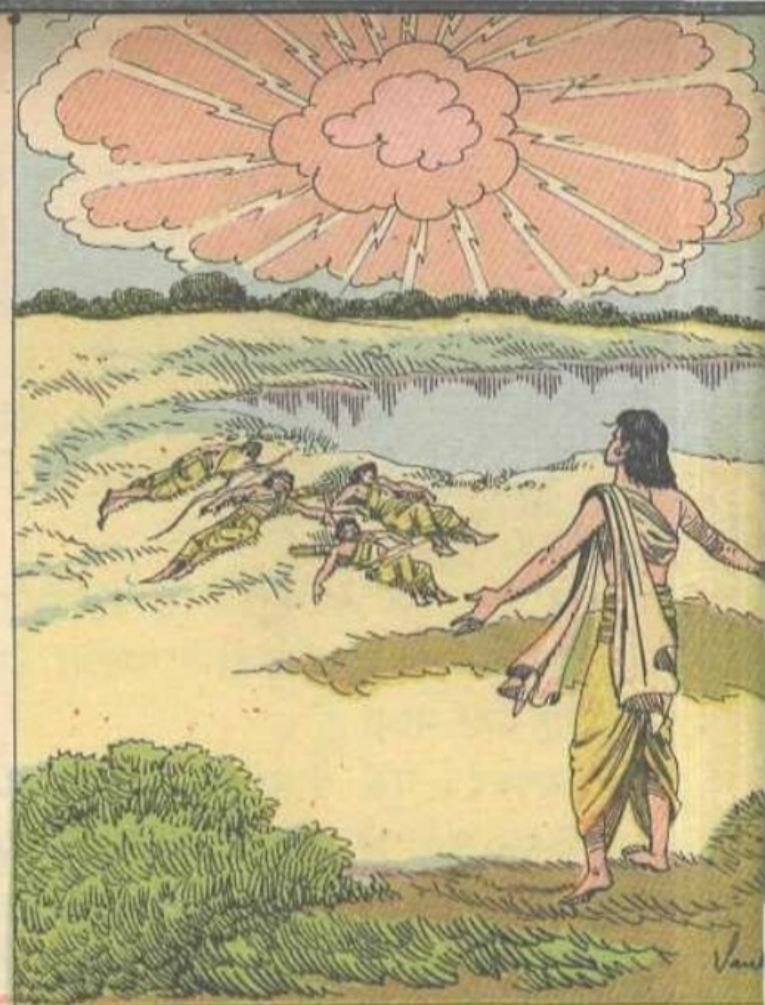
"महा शक्तिशाली भीम तथा पराक्रमी अर्जुन को छोड़ तुम अपनी सौतेली माँ के पुत्र नकुल को जिलाने की माँग क्यों करते हो?" यक्ष ने पूछा।

"यक्षराज! मेरे पिताजी के कुंती और माद्री नामक दो पत्नियाँ थीं। कुंती के पुत्रों में से एक मैं ज़िंदा हूँ। इसलिए मुझे यह उचित लगा कि माद्री के पुत्रों में से भी एक का ज़िंदा रहना ज़रूरी है।" युधिष्ठिर ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है! तुमने धर्म का पक्ष लिया, इसलिए तुम्हारे सभी भाइयों को जिलाता हूँ।" यक्ष ने कहा।

तुरंत भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इस तरह उठ बैठे, मानों वे सब नींद से जाग उठे हो। उन्हें भूख-प्यास तक की भावना न थी।

"महाशय! आप साधारण यक्ष नहीं हैं। कोई देवता हैं। कृपया बताइये!" युधिष्ठिर ने पूछा।

इस पर यक्ष ने कहा–"मैं धर्मदेवता हूँ, तुम्हारे पिता हूँ। तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए यहाँ आया हूँ।"

"भगवन! एक ब्राह्मण के आरणि को एक हिरण उठा ले गया है। बेचारा वह ब्राह्मण उस आरणि के बिना यज्ञ नहीं कर पायगा। उसको इस विघ्न से बचाने की कृपा कीजिये।" युधिष्ठिर ने निवेदन किया।

"मैं ही वह हिरण हूँ। लो, यही वह आरणि है। तुम कोई वर माँग लो, दे देता हूँ।" धर्मदेवता ने कहा।

"हमारे बारह वर्ष का वनवास समाप्त होने को है। कृपया ऐसा वर प्रदान कीजिये जिस से हमारे अज्ञातवास के समय कोई हमें पहचान न सके।" युधिष्ठिर ने पूछा।

धर्मदेवता वर देकर अदृश्य हो गया।

पांडवों ने उस आरणि को ले जाकर उस ब्राह्मण के हाथ सौंप दिया। इस पर ब्राह्मण ने पांडवों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और उन्हें आशीर्वाद दिया कि वे विजयी बने, तब वह अपने रास्ते चला गया।

शीघ्र ही पांडवों का वनवास समाप्त हुआ। वे आज तक अपने साथ रहनेवाले ब्राह्मणों से विदा लेकर उनके आशीर्वाद पाकर चल पड़े।

तब धौम्य ने युधिष्ठिर से कहा–"इन्द्र को भी अज्ञातवास करना पड़ा था। शीघ्र ही आपके कष्ट दूर हो जायेंगे।"

इसके बाद पांडव द्रौपदी तथा धौम्य को साथ ले अपने आश्रम से एक कोस की दूर चले गये। वहाँ पर वे अज्ञातवास के बारे में गुप्त रूप से चर्चा करने लगे।

शिवपुराण

[१८]

शिवजी को न पाकर पार्वती घबरा उठी। उसने रुद्रगणों को आदेश दिया कि वे शिवजी की खोज़ करे। आख़िर उन्हें मालूम हुआ कि शिवजी लिंग रूप में गजासुर के हृदय में निवास कर रहे हैं।

तत्काल पार्वती ने विष्णु के पास जाकर प्रार्थना की–"भैया, मेरे पति को गजासुर ने लिंग रूप में अपने हृदय में छिपा रखा है। किसी भी उपाय से आप उन्हें फिर से कैलास में पहुँचवा दीजिये।"

विष्णु ने पार्वती को आश्वासन दिया, उन्होंने शिवजी के कैलास में लौटने तक गणपतियों के प्रधान को कैलास तथा पार्वती की रक्षा करने का आदेश दिया तब वे रुद्र तथा वीरभद्रगणों के साथ ब्रह्मा के पास चले गये। इन्द्र आदि ने भी आकर विष्णु की योजना का समाचार सुना। इसके बाद सब अपने रूप बदल कर रुद्रगणों के साथ शोणितपुर में गये। नंदी ने नादिया का रूप लिया, बाक़ी सबने विवधि वाद्यकारों के रूप धारण किये। विष्णु ने नादिया को खिलानेवाले का वेष धारण किया। वे सब शोणितपुर की गलियों में घूमते नादिया को खिलाते शिवजी के स्तोत्र करते चलने लगे।

गजासुर ने सुना कि नादिया मनुष्यों के आदेशानुसार करतब करता है, तब आश्चर्य में आकर उसने सबको सभाभवन में बुला भेजा। नादिया गाने के साथ नाचने लगा। नादिया को खिलानेवाले लोग शिवजी की स्तुति में गीत गाने लगे। उन स्तोत्रों को सुनकर गजासुर के हृदय में

अंतिम पृष्ठ का चित्र

स्थित शिवलिंग फूलकर बढ़ने लगा। लिंग के बढ़ने के साथ गजासुर को साँस लेना मुश्किल होता गया। उसने समझ लिया कि उसकी मृत्यु निकट आ गयी है। तब उसने प्रार्थना की–"हे परमेश्वर, मेरी रक्षा करो।"

"गजासुर, तुम्हारी मौत निश्चत है! कोई वर माँग लो।" शिवजी ने कहा।

"मेरा सर पूजा पाता रहे, मेरे चर्म को आप धारण करे और मुझे पुनर्जन्म न हो, ये ही वर मुझे प्रदान कीजिये।" गजासुर ने निवेदन किया।

शिवजी ने गजासुर को तीनों वर दिये। उन्होंने गजासुर को चूहे के रूप में अपने पास रहने का वर दिया, तब उसके पेट को चीरकर बाहर आये।

इसके बाद ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, नन्दीश्वर इत्यादि ने अपने पूर्व रूप को धारणकर शिवजी को प्रणाम किया। फिर रुद्रगणों को साथ ले कैलास को लौट आये। शिवजी ने पार्वती के पास समाचार भेजा कि वे गजासुर को मारकर वापस आ गये हैं।

इसके पूर्व ही पार्वती को यह समाचार मिल गया था, इसलिए पार्वती ने निश्चय किया कि सर स्नान करके गृहदेवताओं की पूजा की जाय! यह निश्चय करके सिंह द्वार पर पहरा देनेवाले लक्ष्मी गणाधिपतियों से बोली–"बेटे, मैं सर स्नान करने जा रही हूँ। मेरे आदेश के बिना किसी को भीतर आने न दो।"

थोड़ी देर बाद नंदीश्वर इत्यादि लोग आकर भीतर घुसने को हुए। तब लक्ष्मी गणाधिपतियों ने उन्हें रोकते हुए कहा–"माँ, स्नान कर रही हैं। किसी को भी भीतर आने से उन्होंने मना कर दिया है। इसलिए उनकी आज्ञा के प्राप्त होने तक तुम लोग भीतर आ नहीं सकते।"

"हमें तो ईश्वर का आदेश मिल चुका है। इन तीनों लोकों में उनकी आज्ञा का कोई विरोध नहीं कर सकता। बीच में रोकनेवाले तुम लोग कौन होते हो?" ये

शब्द कहते रुद्रगणवाले लक्ष्मी गणवालों के साथ लड़ने को तैयार हो गये। धीरे धीरे वहाँ पर कोलाहल बढ़ने लगा।

यह कोलाहल सुनकर पार्वती की एक सखी ने पार्वती से कहा–"माँ, लक्ष्मीगण तथा रुद्रगणों के बीच युद्ध हो रहा है।"

रुद्रगणों के इस व्यवहार पर पार्वती नाराज़ हो गयी और उसने लक्ष्मीगणों की सहायता के लिए देवगणों को भेज दिया। लक्ष्मीगण तथा देवगणों ने मिलकर रुद्रगणों को भगा दिया। उन लोगों ने शिवजी के पास जाकर यह समाचार दिया।

वहाँ पर उपस्थित नारद ने कहा–"क्या पार्वती के द्वारपाल इतने घमण्ड हो गये हैं? शिवजी की आज्ञा का भी विरोध करते हैं?"

शिवजी अपने सेवकों को घायल हुए देख पहले ही नाराज़ थे, नारद की बातों ने उन्हें और उकसाया। उन्होंने तुरंत अपने त्रिशूल को भेजकर लक्ष्मीगणों के सर कटवा दिये। अपने प्यारे पुत्रों के सर कटे देख पार्वती गहरी चिंता में डूब गयी।

अब पार्वती के द्वार के पास भीतर आने से रोकनेवाला कोई न था। इसलिए शिवजी ब्रह्मा, विष्णु इत्यादि को साथ लेकर पार्वती के घर आ पहुँचे। तब तक पार्वती स्नान-पूजा आदि समाप्त कर अलंकार करके लक्ष्मीगणों की मृत्यु पर चिंतामग्न थी। इसलिए उसने उनका आदर नहीं किया। शिवजी पार्वती के दुख को दूर करने के विचार से उसके निकट

गये। पर पार्वती ने शिवजी की ओर आँख उठाकर नहीं देखा।

इस पर विष्णु ने पार्वती को समझाया– "बहन, गजासुर की मृत्यु पर तीनों लोकों के लोग प्रसन्न हैं, तुम चिंता में क्यों डूबी हुई हो? तुम्हें कैसी तक़लीफ़ है? बताओ, मैं दूर कर दूँगा।"

पार्वती ने विष्णु से कहा–"भैया, शिवजी ने अकारण ही मेरे पुत्र लक्ष्मीगणों का वध कराया है। उन्हें जिलाकर उन्हें जब तक उनके अधिकार दिये न जाय तब तक मेरा दुख दूर न होगा।"

ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी तीनों बैठकर जब इस विषय पर चर्चा करने लगे, तब शिवजी ने वह बात स्मरण दिलायी जो वर उन्होंने गजासुर को दिया था। गजासुर ने वर माँगा था कि उसका सर पूजा जाय और उसका चर्म शिवजी धारण करे।

इसलिए लक्ष्मीगणों के अधिपति के शरीर को मँगवाया, रुद्रगणों के द्वारा गजासुर का सर मँगवाकर उसे लक्ष्मी गणाधिपति के शरीर पर जुड़वा दिया। तुरंत लक्ष्मी गणाधिपति इस तरह उठ खड़ा हुआ, मानों नींद से जाग उठा हो। उसने पार्वती तथा विष्णु को प्रणाम किया। इसके बाद इसी प्रकार बाक़ी बीस गणाधिपतियों के धड़ों पर हाथी के सर जुड़वा दिये गये। तुरंत वे सब भी जी उठे। लक्ष्मीगणों को जीवित देख पार्वती देवी बहुत प्रसन्न हो उठी।

उस समय विश्वदर्शी नामक उपब्रह्मा ने उठकर कहा–"शिव-पार्वतीजी, मैं चाहता हूँ कि मेरी पुत्रियाँ जयलक्ष्मी इत्यादि का लक्ष्मी गणाधिपतियों के साथ विवाह करूँ!"

उसकी बात पर सब खुश हुए। ब्रह्मा ने पुरोहित बनकर विश्वदर्शी की पुत्रियों का विवाह गणाधिपतियों के साथ संपन्न किया। गणाधिपतियों में ज्येष्ठ व्यक्ति लक्ष्मी गणपति है और उसकी पत्नी जयलक्ष्मी है।

संसार के आश्चर्य:

१२४. सिनाय पर्वत

इसी पर्वत पर मोजेस ने "दस सूत्र" (टेन कमाण्डमेन्ट्स) स्वीकार किया था। निचले दुर्ग में प्राचीनकाल के ईसाइयों ने आश्रय लिया था। यह सिनाय रेगिस्तान के मध्य भाग में है।

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

दोनों का है प्यार अनोखा

प्रेषक :
प्रेमनारायण खुशवाला

Photo by Brahm Dev
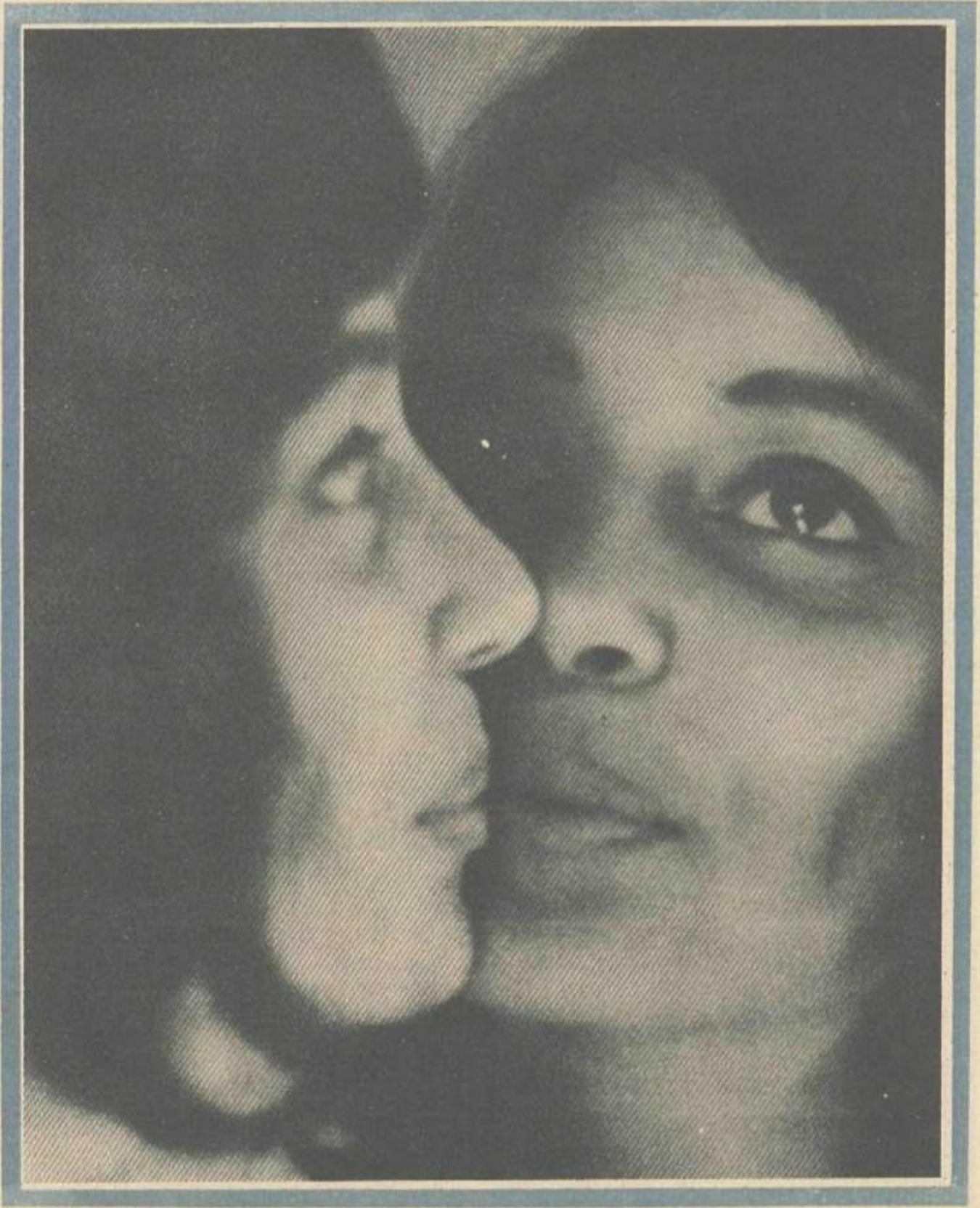
बेसिक ट्राइनिंग स्कूल
मनमाड़ (नासिक जिला)

सूरत कभी न खाये धोखा

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तिया अप्रैल ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

कपड़ों को
सर्वोत्तम सफ़ेद
धोता है

रंगीन कपड़ों को
अत्यधिक चमकदार
बनाता है

कपड़ों और हाथों की
सर्वाधिक सुरक्षा
करता है

नया त्रिविध क्रियाशील डेट

* नया डेट एक अति सफ़ेद पाउडर है जिसम कपड़ों की सर्वोत्तम सफ़ेदी के लिये एक उत्तम पदार्थ है।
* नया डेट एक शक्तिशाली पाउडर है जो कपड़ों में जमे बैठे मैल को दूर करता है और रंगीन कपड़ों को चमकदार बना देता है।
* नया डेट भरपूर झाग देता है जिसमें कपड़ों को मुलायम बनाने वाला एक विशेष पदार्थ मिला है। यह आपके कपड़ों को सर्वाधिक सुरक्षित तरीक़े से धोता है और आपके हाथों को भी मुलायम रखता है।

५ नये साइज़ :
डेट २००, ४००, ६००, ८००, १०००.

Shilpi-HPMA 61F/71 Hin

टैबी
और
विमानडाकू

टैबी छुट्टी मनाने विमान से रवाना होता है। पर...
हमारा विमान
जबर्दस्ती उतारा जा रहा है।
कृपया शांत रहिये।

खाना व पानी
मुश्किल से ही है।
हम अधिक दिन
जिन्दा नहीं रह सकते।

काश मेरे पास इतनी शक्ति होती कि
विमान डाकुओं का
मुकाबला कर सकता।
दो दिन बाद...

जल्दी करो!
एनर्जी टैब्स
फौरन
शक्ति देती हैं!

अच्छा! हाथ ऊपर करो!

टैबी इस मदद के लिए
धन्यवाद।
धन्यवाद तो
एनर्जी टैब्स को दीजिए।

स्वादिष्ट नारंगी व अनन्नास की सुगंध वाली
ग्लैक्सोज़-डी
एनर्जी टैब्स
थकान फ़ौरन मिटाती हैं!

Photo by : SURAJ N. SHARMA

CHANDAMAMA (Hindi) APR. 1972 92 Paise Including Excise Duty Regd. No. M. 5452

शिवपुराण